सहजो बाई की बानी

जीवन-चरित्र सहित

[सहज प्रकाश]

(27)

मुद्रक व प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,

इलाहाबाद

सन् १९८० ई०

[मूल्य ४)

सहजो बाई

की

बानी

जीवन-चरित्र सहित

[सहज प्रकाश]

नये पदों के साथ जो अब मिले हैं छापी गई है।

यह अपूर्व पुस्तक बाबू अयोध्या प्रसाद साहिब, उर्फ लालाजी, रईस, आगरा, की आज्ञानुसार छापी गई है।

प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।

बारहवीं बार] सन् १९७७ [मूल्य २)

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan

सहजो बाई का जीवन-चरित्र

सहजो बाई राजपूताना के एक प्रतिष्ठित ढूसर कुल की स्त्री थीं जो परम भक्त हुईं और संत मत के अनुसार साध गति को प्राप्त हुईं। इनका जीवन-चरित्र हमने भक्त-माल और उस प्रकार की कई पुस्तकों में ढूँढ़ा परन्तु कहीं कुछ प्रमाणिक वृत्तान्त न पाया। उनकी बानी से इतना निश्चय होता है कि वह सम्बत् १८०० में बर्तमान थीं और प्रसिद्ध महात्मा चरनदास जी की गुरुमुख चेली थीं जो आप भी मेवात के एक ढूसर कुल में प्रकट हुए थे और जिनके अनुयायी भारतवर्ष के देश-देशान्तर में अब तक हजारों हैं, यद्यपि उनमें शब्द अभ्यासी और भेदी बिरले देख पड़ते हैं। सहजो बाई की बानी से चरनदासजी के जन्म का समय भादों सुदी ३ मंगलवार संबत् १७६० बिक्रमी प्रमान होता है।

सहजो बाई के विषय में कोई कोई चमत्कार के कौतुक प्रसिद्ध हैं परन्तु चूँकि उनका कहीं प्रमान नहीं मिलता यहाँ लिखना उचित नहीं है। उनकी गहरी गुरुभक्ति और गति उनकी अति कोमल, मधुर और हृदयबेधक बानी से जानी जा सकती है।

दयाबाई (जिनकी कोमल और मधुर बानी अलग छपी है) सहजो बाई की सजाती और गुर-बहिन थीं।

अधम, एडिटर संतबानी पुस्तकमाला।

॥ सूचीपत्र ॥

सहजो बाई का सहज प्रकाश

सतगुरु महिमा का अंग

॥ दोहा ॥

कर जोरूँ परनाम करि, धरूँ चरन पर सीस ।
दादा गुरु सुकदेव जी, पूरन बिस्वा बीस ॥ १ ॥
परमहंस तारन तरन, गुरु देवन गुरु देव ।
अनुभै बानो दीजिये, सहजो पावै भेव ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

नमो नमो गुरु देवन देवा । नमो नमो गुरु अगम अभेवा ॥
नमो नमो निरलम्ब निरासा । नमो नमो परमातम बासा ॥
नमो नमो त्रिभुवन के स्वामी । नमो नमो गुरु अंतरजामी ॥
नमो नमो गुरु पातक हरता । नमो नमो पारायन करता ॥
गति मति छाके आनँद रूपा । नमो नमो गुरु ब्रह्म सरूपा ॥
नमो नमो मम प्रान पियारे । नमो नमो तिर्गुन तें न्यारे ॥
भक्ती ज्ञान जोग के राजा । सहजो के पुरवो सब काजा ॥
जो कोइ सरन तुम्हारी आयो । तुरियातीत बिज्ञान बसायो ॥३॥

॥ दोहा ॥

निर्मल आनँद देत हौ, ब्रह्म रूप करि देत ।
जीव रूप की आपदा, ब्याधा सब हरि लेत ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

नमो नमो सुकदेव गुसाईं । प्रकट करी भक्ती जग माहीं ॥
श्रीमतभागवत् भानु प्रकासा । पद सुनि कटै तिमिर को फाँसा ॥
ज्ञान जोग की नौका कीन्ही । चरनदास केवट को दीन्ही ॥
बहुतक पापी जीव चढ़ाये । भवसागर सूँ पार लँघाये ॥

किरपा बल्ली हाथ में राखैं। काहू तें दुरबचन न भाखैं॥
अमृत बचन बोलि बैठावैं। नर नारी लौं पतित तिरावैं॥
कलिजुग में सतजुग बिस्तारा। राम भक्ति का खोल दुवारा॥
सुनि सुनि कै जिज्ञासू आवैं। उनहूँ के सन्देह मिटावैं॥५॥

॥ दोहा ॥

गुरु हैं चार प्रकार के, अपने अपने अङ्ग।
गुरु पारस दीपक गुरू, मलयागिरि गुरु भृङ्ग॥ ६॥
चरनदास समरथ गुरू, सर्ब अंग तेहि माहिं।
जैसे कूँ तैसा मिलै, रीता छाँड़ै नाहिं॥ ७॥

॥ चौपाई ॥

लोहे कूँ पारस होय लागैं। कंचन करैं बेर नहिं ताकैं॥
सिष पलास चन्दन करि डारैं। मलयागिरि ह्वै कारज सारैं।
सिष समान कीट के आवैं। भृङ्गी ह्वैकर ताहि बनावैं॥
करै भिरिंगी ढील न कोई। पलटै रूप पाछलो सोई।
बिना लोय[1] दीपक सिष परसैं। ह्वै दीपक तिनहूँ कूँ दरसैं॥
बकसैं अपनी जोति उजारा। होय चाँदना भवन मँझारा॥
चरनदास गुरु समरथ ऐसे। सहजो बाई भाखत जैसे॥
सब गति सब अँग है उन माहीं। उनतें भेद छिप्यो कोइ नाहीं॥८॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान भक्ति अरु जोग का, घट लेवैं पहिचान।
जैसी जा की बुद्धि है, सोई बतावैं ध्यान॥ ९॥

॥ चौपाई ॥

आप सबन में सब तें न्यारे। चार बुद्धि के मनुष सँवारे॥
प्रथम बुद्धि जल-लीक खिचाई। खिचती जाय सोई मिटि जाई॥
दूजी बुद्धि लीक रस्ते की। चलै मनोरथ मिटै हिये की॥
तीजी बुद्धि पाहन की रेखा। घटै सही पर बढ़ै न नेका॥

(१) लौ।

चौथी तेल बूँद जल माहीं । फैलत फैलत फैलत जाही ॥
छोटी से दीरघ परकासै । बरन बरन के रंग निकासै ॥
तीन बुद्धि जग में दरसावै । चौथो बुद्धि कोइ बिरलै पावै ॥
सहजो बुधि सब थोथी कहिये । गुरु की कृपा सबन में चहिये॥१०॥

हरि तें गुरु की विशेषता

॥ दोहा ॥

हरि किरपा जो होय तो, नाहीं होय तो नाहिं ।
पै गुरु किरपा दया बिनु, सकल बुद्धि बहि जाहिं ॥११॥

॥ चौपाई ॥

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ । गुरु के सम हरि कूँ न निहारूँ ॥
हरि ने जन्म दियो जग माहीं । गुरु ने आवागवन छुटाहीं ॥
हरि ने पाँच चोर दिये साथा । गुरु ने लई छुटाय अनाथा ॥
हरि ने कुटँब जाल में गेरी । गुरु ने काटी ममता बेरी[1] ॥
हरि ने रोग भोग उरझायो । गुरु जोगी कर सबै छुटायो ॥
हरि ने कर्म भर्म भरमायो । गुरु ने आतम रूप लखायो ॥
हरि ने मो सूँ आप छिपायो । गुरु दीपक दै ताहि दिखायो ॥
फिर हरि बंधमुक्ति[2] गति लाये । गुरु ने सबही भर्म मिटाये ॥
चरनदास पर तन मन वारूँ । गुरु न तजूँ हरि कूँ तजि डारूँ॥१२॥

॥ दोहा ॥

सब परबत स्याही करूँ, घोलूँ समुँदर जाय ।
धरती का कागद करूँ, गुरु अस्तुति न समाय ॥१३॥

॥ चौपाई ॥

गुरु की अस्तुति कहँ लौं कीजै । बदला कहा गुरू कूँ दीजै ॥
गुरु का बदला दिया न जाई । मन में उपजत है सकुचाई ॥
इन नैनन जिन राम दिखाये । बंधन कोटि काटि मुक्ताये ॥

---

(१) बेड़ी । (२) ऐसी मुक्ति जिसमें झीनी माया का बन्धन लगा रहता है ।

अभय दान दीनन कूँ दीन्हे । देवत आप सरीखे कीन्हे ।।
गुरु को किरपा अपरम्पारे । गुन गावत मम रसना हारे ।।
सेस सहस मुख निस दिन गावै । गुरु अस्तुति का अन्त न पावै ।।
मौन गहूँ अस्तुति कहा करऊँ । बार बार चरनन सिर धरऊँ ।।
चरनदास महिमा अधिकाई । सबस वारे सहजो बाई ।।१४।।

गुरु मारग

।। दोहा ।।

गुरु मग दृढ़ पग राखिये, डिगमिग डिगमिग छाँड ।
सहजो टेक टरै नहीं, सूर सती ज्यों माँड ।।१५।।

।। चौपाई ।।

गुरु के प्रेम पन्थ सिर दीजै । आगा पीछा कबहुँ न कीजै ।।
गुरु के पन्थ होय सो होई । मारग आन चलो मत कोई ।।
गुरु के पन्थ पैज[1] का पूरा । गुरु के पन्थ चलै सो सूरा ।।
गुरु के पन्थ चलै सो जोधा । गुरु के पन्थ चलै का बोदा ।।
गुरु के पन्थ नहीं ठग लागै । गुरु के पन्थ कपट भय भागै ।।
गुरु के पन्थ मुक्ति उजियारा । गुरु के पन्थ नहीं संसारा ।।
गुरु के पन्थ मिटै दुख दोई । गुरु के पन्थ महा सुख होई ।।
चरनदास कौ पन्थ दुहेला । गुरमुख चालै ताहि सुहेला ।।
गुरु के पन्थ चलै सतबादी । सहजो पावै भेद अनादी ।।१६।।

गुरु चरन

।। दोहा ।।

अठसठ तीरथ गुरु चरन, परबी होत अखंड ।
सहजो ऐसा धाम नहिं, सकल अंड ब्रह्मंड ।।१७।।
सब तीरथ गुरु के चरन, नित ही परबी होय ।
सहजो चरनोदक लिये, पार रहत नहि कोय ।।१८।।

---

(१) टेक ।

॥ चौपाई ॥

सब तीरथ गुरु चरनन लारे । चरन बर्त दृढ़ सदा हमारे ॥
चरन कँवल की निसदिन पूजा । परसूँ और देव नहिं दूजा ॥
इष्ट हमारे गुरु के चरना । गुरु के चरन ध्यान हूँ करना ॥
गुरु के चरन लगे सो तारे । गुरु के चरन प्रान सूँ प्यारे ॥
आसा मनसा और करमना । गुरु के चरन प्रेम चित धरना ॥
गुरु के चरन होय सो होना । हानि लाभ के दुख सुख मरना ॥
रनजीता[1] गुरु चरन तुम्हारे । जीवन प्रान अधार हमारे ॥
गुरु के चरन मुक्ति फलदायक । सहजो गुरु के चरन सहायक ॥१६॥

॥ दोहा ॥

गुरु पग निस्चै परसिये, गुरु पग हिरदे राख ।
सहजो गुरु पग ध्यान करि, गुरु बिन और न भाख ॥२०॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के चरन कँवल चित राखूँ । आठ सिद्धि नौ निधि सब नाखूँ ॥
सकल पदारथ गुरु पग माहीं । गुरु पग परसे सब दुख जाहीं ॥
गति मति पलटे गुरु पग परसे । गुरु पग परसे त्रिभुवन दरसे ॥
गुरु पग परसे ब्रह्म बिचारै । गुरु पग परसे माया छाँड़ै ॥
गुरु पग परसे जोग जुगन्ता । गुरु पग परसे जीवन मुक्ता ॥
गुरु पग परसे बन्धन छूटै । मोह ममत की फाँसी टूटै ॥
गुरु पग परसे हरि पद पावे । रहै अमर ह्वै गर्भ न आवे ॥
चरनदास पग महिमा भारी । बार बार सहजो बलिहारी ॥२१॥

गुरु आज्ञा

॥ दोहा ॥

गुरु अज्ञा दृढ़ करि गहै, गुरु मत सहजो चाल ।
रोम रोम गुरु को रटै, सो सिष होय निहाल ॥२२॥

---

(१) चरनदास जी का घरऊ नाम ।

॥ चौपाई ॥

गुरु को अज्ञा दृढ़ करि गहिये । गुरु की अज्ञा ही में रहिये ॥
गुरु अज्ञा बिन काज न कीजै । हानि होय तो होने दीजै ॥
गुरु की अज्ञा विघ्न न कोई । गुरु की अज्ञा गुरुमुख होई ॥
गुरु की अज्ञा भक्ति बढ़ावे । गुरु की अज्ञा पार लँघावे ॥
गुरु की अज्ञा सकल सिरोमन । गुरु की अज्ञा चलै सो हरिजन ॥
गुरु अज्ञा मानै सोइ साधू । गुरु अज्ञा पद भेद अगाधू ॥
जो कोइ गुरु की अज्ञा भूलै । फिर फिर कष्ट गर्भ में झूलै ॥
चरनदास गुरु अज्ञा पूरी । बिन अज्ञा करनी सब कूरी ॥
अज्ञाकारी गुरुमुख नीके । सहजो लोक भोग सब फीके ॥२३॥

गुरु बिमुख

॥ दोहा ॥

गुरु अज्ञा मानै नहीं, गुरुहि लगावे दोष ।
गुरु निन्दक जग में दुखी, मुए न पावे मोष ॥२४॥

॥ चौपाई ॥

ऐसों का दरसन नहिं लीजै । चर्चा बात गोष्टि नहिं कीजै ॥
उनका संग करै जो कोई । बेमुख निगुरा निन्दक होई ॥
गुरु-दोषी की गति मति गाऊँ । अपने मनहीं कूँ समझाऊँ ॥
उनकी चौरासी नहिं छूटै । काल जाल जम जोरा लूटै ॥
फिर फिर जूनी संकट आवे । गर्भ बास में बहु दुख पावे ॥
जग में पात बगूला जैसे । जीवत प्रेत निसाचर ऐसे ॥
मन मैला तन सदा उदासी । गल में डिम्भ कपट की फाँसी ॥
सहजो तिन तें दूरहि भाजै । नाम लेत मम रसना लाजै ॥२५॥

॥ दोहा ॥

जो कुछ करै तो मनमुखी, मेटै गुरमुख रीत ।
भेद बचन समझै नहीं, चलै चाल बिपरीत ॥२६॥

साध कहावे आप कूँ, चलै दुष्ट को चाल।
बाद लिये फूला फिरै, बहुत बजावे गाल ॥२७॥

॥ चौपाई ॥

बेमुख विषई ज्ञान उचारै। पाँचो जीत न मन कूँ मारै॥
दारा सुत कूँ हरि गुरु जाने। तन मन विषय बास लिपटाने॥
पाप पुन्य कूँ झूठ बतावे। परनारी परधन चित लावे॥
महा अजोगी जोग न ठाने। छल बल झूठ कपट सिध माने॥
साध संत कूँ ठगिया जाने। राम भक्ति कूँ तुच्छ बखानै॥
ऐसे अपराधी मति मारे। तृस्ना काम क्रोध के जारे॥
डूबे लोभ लहर के माहीं। सुपने छिमा सील चित नाहीं॥
हिंसा अंकुस लिये दुखदाई। मुख देखे नहिं सहजो बाई ॥२८॥

गुरु शब्द

॥ दोहा ॥

गुरू बचन हियरे धरै, ज्यों किर्पिन के दाम।
भूमि गड़े माथे दिये, सहजो लहै तो राम ॥२९॥

॥ चौपाई ॥

गुरु के सब्द हिये बिच धारै। गुरुमुख गुर के सब्द सम्हारै॥
तीन लोक जम जोरा लूटै। गुरु के सब्द बिना नहिं छूटै॥
मोह नींद में सब नर पागे। गुरु के सब्द बिना नहिं जागे॥
गुरु के सब्द स्रवन जो जावैं। छूटै कुबुधि परम गति पावैं॥
गुरु के सब्द प्रेम उजलावैं। गुरु के सब्द हरि आन मिलावैं॥
गुरु के सब्द जीव बुधि नासैं। गुरु के सब्द अभय पद भासैं॥
गुरु के सब्द राह सोइ चलना। बेद पुरान कहा लै करना॥
चरनदास गुरु सब्द तुम्हारे। हमरे भर्म फन्द सब जारे॥
गुन सब गुरु के बचनै माहीं। सहजो सिष जो बिसरै नाहीं ॥३०॥

उपदेश गुरुभक्ति का

॥ दोहा ॥

सिष का माना सतगुरु, गुरु झिड़कै लख बार।
सहजो द्वार न छोड़िये, यही धारना धार ॥३१॥
गुरु दरसन कर सहजिया, गुरु का कीजै ध्यान।
गुरु की सेवा कीजिये, तजिये कुल अभिमान ॥३२॥
सतगुरु दाता सर्ब के, तू किर्पिन कंगाल।
गुरु महिमा जानै नहीं, फस्यौ मोह के जाल ॥३३॥
गुरु सूँ कछु न दुराइये, गुरु सूँ झूठ न बोल।
बुरी भलो खोटी खरी, गुरु आगे सब खोल ॥३४॥
सहजो गुरु रच्छा करैं, मेटैं सब दुख दुन्द।
मन को जानैं सब गुरु, कहा छिपावै अन्ध ॥३५॥

गुरु महिमा

॥ दोहा ॥

सहजो कारज जगत के, गुरु बिन पूरे नाहिं।
हरि तो गुरु बिन क्यों मिलैं, समझ देख मन माहिं ॥३६॥
परमेसर सूँ गुरु बड़े, गावत बेद पुरान।
सहजो हरि के मुक्ति है, गुरु के घर भगवान ॥३७॥
अष्टादस और चार षट, पढ़ि पढ़ि अर्थ कराहिं।
भेद न पावैं गुरु बिना, सहजो सब भर्माहिं ॥३८॥
सकल बिकल सब छोड़ कर, गुरु चरनन चित लाव।
सहजो निस्चै हरि जपो, बहुर न ऐसो दाव ॥३९॥
दीपक ले गुरु ज्ञान को, जगत अँधेरे माहिं।
काम क्रोध मद मोह में, सहजा उरझै नाहिं ॥४०॥
सहजो गुरु परताप सूँ, होय समुन्दर पार।
बेद अर्थ गूँगा कहै, बानो कितइक बार ॥४१॥

सहजो सतगुरु के मिले, भये और सूँ और।
काग पलट गति हंस ह्वै, पाई भूली ठौर ॥४२॥
सहजो यह मन सिलगता, काम क्रोध की आग।
भली भई गुरु ने दिया, सील छिमा का बाग ॥४३॥
निस्चै यह मन डूबता, मोह लोभ की धार।
चरनदास सतगुरु मिले, सहजो लई उबार ॥४४॥
ज्ञान दीप सतगुरु दियौ, राख्यौ काया कोट।
साजन बसि दुर्जन भजे[1], निकस गई सब खोट ॥४५॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, रोम रोम उजियार।
तीन लोक द्रष्टा भये, मिट्यौ भरम अँधियार ॥४६॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, नैना भये अनन्त।
आदि अन्त मध एक ही, सूझि पड़ै भगवन्त ॥४७॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, देख्यौ आतम रूप।
तिमिर गयौ चाँदन भयौ, पायौ परघट गूप ॥४८॥
सहजो गुरु परसन्न ह्वै, मेट्यौ मन सन्देह।
रोम रोम सूँ प्रेम उठि, भीँज गई सब देह ॥४९॥
सहजो गुरु परसन्न ह्वै, एक कह्यौ परसंग।
तन मन तें पलटी गई, रँगी प्रेम के रंग ॥५०॥
सहजो गुरु परसन्न ह्वै, मूँद लिये दोउ नैन।
फिर मो सूँ ऐसे कही, समझ लेहि यह सैन ॥५१॥
सहजो गुरु किरपा करी, कहा कहूँ मैं खोल।
रोम रोम फुल्लित भई, मुखे न आवै बोल ॥५२॥
चिंउटी जहाँ न चढ़ि सकै, सरसों ना ठहराय।
सहजो कूँ वा देस में, सतगुरु दई बसाय ॥५३॥

(१) भागे।

सिष पौधा नौधा अभी, गुरु किरपा की बाड़ ।
सहजो तरवर फैल बड़, सुफल फलै वह झाड़ ॥५४॥
सहजो सिष ऐसा भला, जैसे माटी मोय ।
आपा सौंपि कुम्हार कूँ, जो कछु होय सो होय ॥५५॥
सहजो सिष ऐसा भला, जैसे चकई डोर ।
गुरु फेरैं त्यौं ही फिरै, त्यागै अपना खोर[1] ॥५६॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, जैसे धोबी होय ।
दे दे साबुन ज्ञान का, मलमल डारै धोय ॥५७॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, मेटै मन सन्देह ।
नीच ऊँच देखै नहीं, सब पर बरसै मेह ॥५८॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, जैसे सूरज धूप ।
सब जीवन कूँ चाँदना, कहा रंक कहा भूप ॥५९॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, समदृष्टी निर्लोभ ।
सिष कूँ प्रेम समुद्र में, करदे झोबाझोब ॥६०॥
सहजो गुरु बहुतक फिरैं, ज्ञान ध्यान सुधि नाहिं ।
तार सकैं नहिं एक कूँ, गहैं बहुत की बाहिं ॥६१॥
ऐसे गुरु तो बहुत हैं, धूत धूत धन लेहिं ।
सहजो सतगुरु जो मिलैं, मुक्ति धाम फल देहिं ॥६२॥
कुटंब जाल जित तित रुप्यो, पसु पंछी नर माहिं ।
सहजो गुरुबर्ती बचै, निगुरे अरुझत जाहिं ॥६३॥
बार बार नाते मिलैं, लख चौरासी माहिं ।
सहजो सतगुरु ना मिलैं, पकड़ निकासैं बाहिं ॥६४॥
जन्म जन्म हरि संग ही, मिलि रह्यौ आठो जाम ।
सहजो गुरु के बिन मिले, पायो ना बिसराम ॥६५॥

---

(१) रास्ता, आदत ।

सहजो गुरु पूरा मिले, सिष मैला घट चित्त।
मेह बरसै काल्लर[1] जिमीं, खेत न उपजै छित्त[2] ॥६६॥
मलयागिरि के निकट जो, सब द्रुम चंदन होहिं।
कीकर सीसों चीड़ बृच्छ, हुए न कबहूँ होहिं ॥६७॥
सिष माटी सिष पाथरा, सिष लकड़ी सम जोय।
सहजो गुरु पारस लगे, कैसे कंचन होय ॥६८॥
सिष्य सराई[3] तेल बिन, बाती भी नहिं माहिं।
सहजो गुरु दीपक मिलै, चाँदन होसी नाहिं ॥६९॥
सहजो गुरु समरथ कला, सर्बदेसी सर्ब अंग।
कोइ कैसा ही सिष्य हो, सब पर गेरै रंग ॥७०॥
सहजो गुरु रँगरेज सा, सबहीं कूँ रँग देत।
जैसा तैसा बसन है, जो कोइ आवै सेत ॥७१॥
सहजो गुरु दरसन दियो, पूर रहे सब ठौर।
जहाँ तहाँ गुरु ही लखै, दृष्टि न आवै और ॥७२॥
देखत ही आनंद भये, सतगुरु पहुँचे आय।
भवसागर दुख रूप सूँ, सहजो लई बचाय ॥७३॥
चरनदास के चरन पर, सहजो वारै प्रान।
जगत ब्याध सूँ काढ़ि कर, राख्यो पद निरबान ॥७४॥
सहजो गुरु महिमा कही, पढ़ सुनि हिया सिराय[4]।
उपजै गुरु की भक्ति दृढ़, दुबिधा दुर्मति जाय ॥७५॥

साध महिमा

॥ दोहा ॥

साध मिले गुरु पाइया, मिटि गये सब सन्देह।
सहजो कूँ सम ही भयो, कहा गिरवर कहा गेह ॥ १ ॥

---

(१) कल्लर = ऊसर। (२) पृथ्वी। (३) दिया या दीवा। (४) ठंडा होय।

साध मिले पूरी भई, जनम जनम की आस।
सहजो पायौ भाव तें, सतसंगत में बास॥ २॥
सहजो साधन के मिले, मन भयो हरि के रूप।
चाह गई थिरता भई, रंक लख्यौ सोइ भूप॥ ३॥
साध मिले हरि ही मिले, मेरे मन परतीत।
सहजो सूरज धूप ज्यों, जल पाले की रीति॥ ४॥
साध मिले दुख सब गये, मंगल भये सरीर।
बचन सुनत ही मिटि गई, जनम मरन की पीर॥ ५॥
साध संग में चाँदना, सकल अँधेरा और।
सहजो दुर्लभ पाइये, सतसंगत में ठौर॥ ६॥
सतसंगत की नाव में, मन दीजै नर नार।
टेक बल्ली दृढ़ भक्ति की, सहजो उतरै पार॥ ७॥
साध संग तीरत बड़ो, ता में नीर बिचार।
सहजो न्हाये पाइये, मुक्ति पदारथ चार॥ ८॥
जो आवे सतसंग में, जाति बरन कुल खोय।
सहजो मैल कुचैल जल, मिलै सु गंगा होय॥ ९॥
सहजो संगत साध की, काग हंस ह्वै जाय।
तजि के भच्छ अभच्छ कूँ, मोती चुगि चुगि खाय॥१०॥
जब चेतै जबही भला, मोह नींद सूँ जाग।
साधू की संगत मिलै, सहजो ऊँचे भाग॥११॥
जो जन आवै टूट करि, साधू ह्वै दरसाय।
सहजो साँभर खेत में, गिरि साँभर ह्वै जाय॥१२॥
सहजो संगत साध की, भली भई कुसलात।
नातर आवा गवन में, जम ही करते घात॥१३॥
सहजो संगत साध की, छूटै सकल बियाध।
दुर्मति पाप रहै नहीं, लागै रंग अगाध॥१४॥

साध बृच्छ बानी कली, चर्चा फूले फूल ।
सहजो संगत बाग में, नाना फल रहे झूल ॥१५॥
सहजो दरसन साध का, दो नैनों भरि लेहि ।
तिहूँ ताप नसि जायँगे, सीतल होगा देहि ॥१६॥
सहजो दरसन साध का, देखूँ वारूँ प्रान ।
जिन की किरपा पाइये, निर्भय पद निर्बान ॥१७॥

दुष्ट लक्षण

॥ दोहा ॥

दुष्टन की महिमा कहूँ, सुनियो संत सुजान ।
ताना दै दै दृढ़ करैं, भक्ती जोग अरु ज्ञान ॥१८॥

॥ चौपाई ॥

धन दुष्टी जो दृढ़ता देई । निन्दा कर पातक हरि लेई ॥
दुष्टी त्यागी दीखै भारी । समझ सोच सहजो बलिहारी ॥
तज दइ साध संग गुरु चरना । त्यागो भक्ति ध्यान का धरना ॥
त्यागी उत्तम रहनी गहनी । त्यागी हरि की लीला कहनी ॥
त्यागे बचन बिमल सुखदाई । तजि दियो साँच झूठ लौ लाई ॥
जत सत सील छिमा तजि दीन्हा । सो साधू माथे धरि लीन्हा ॥
तजी दीनता सुबुधि चिताई[1] । सो गरीब साधों ने पाई ॥
तजि बैराग परम संतोषा । सब बिधि तज्यो राम गति मोषा ॥१९॥

॥ दोहा ॥

भली चाल दुष्टी तजै, ऐसा त्यागा होय ।
बुरी चाल साधू तजै, तजन कहै सब कोय ॥२०॥

साध लक्षण

॥ चौपाई ॥

साध सोई जो काया साधै । तजि आलस और बाद बिबादै ॥
गहै धारना सब गति भारी । तजै बिकलता अस्तुति गारी ॥
छिमावन्त धीरज कूँ धारै । पाँचो बस करि मन कूँ मारै ॥

(१) सावधानता ।

त्यागे झूँठ साँच मुख बोलै। चित इस्थिर इत उत ना डोलै॥
तन जग में मन हरि के पासा। लोक भोग सूँ सदा उदासा॥
जत सत नख सिख सीतलताई। तन मन बचन सकल सुखदाई॥
निर्गुन ध्यानी ब्रह्म गियानी। मुख सूँ बोलै अमृत बानी॥
समझ एकता भाव न दूजे। जिनके चरन सहजिया पूजे॥२१॥

॥ दोहा ॥

निर्दुन्दी निर्बैरता, सहजो अरु निर्बास।
सन्तोषी निर्मल दसा, तकै न पर को आस॥२२॥
ज्ञान मध्य इस्थिर दसा, ध्यान मध्य गलतान।
सहजो साधू राम के, तजैं बड़ाई मान॥२३॥
जो सोवैं ता सुन्न में, जो जागैं हरि नाम।
जो बोलैं तो हरि कथा, भक्ति करैं निःकाम॥२४॥
तन मन मेटैं खेद सब, तज उपाधि की चाल।
सहजो साधू राम के, तज कनक और बाल[1]॥२५॥
दीर्घ बुद्धि जिनकी महा, सील सदा ही नैन।
चेतनता हिरदे बसे, सहजो सीतल बैन॥२६॥
तन कूँ साधे हो रहैं, चित कूँ राखैं हाथ।
सहजो मन कूँ यौं गहैं, चलैं न इन्द्रिन साथ॥२७॥
नित ही प्रेम पगे रहैं, छके रहैं निज रूप।
समदृष्टी सहजो कहै, समझैं रंक न भूप॥२८॥
सुरत नहीं ब्यौहार में, जगत रीत सूँ पीठ।
सनमुख हैं गुरु भक्ति में, सहजो हरि के ईठ[2]॥२९॥
साध असंगी सँग तजैं, आतम ही को संग।
बोध रूप आनन्द में, पियैं सहज को रंग॥३०॥

(१) स्त्री। (२) इष्ट, प्यारे।

दुर्जन ना साजन नहीं, नहीं बैर नहिं प्रीत ।
सकल बिकल उनके नहीं, सहजो हरि जन रीत ॥३१॥
सहजो हरि जन मुक्त हैं, डार दुई की पोट ।
चाह गई संसा मिटा, बंधन छूटे कोट ॥३२॥
राग द्वेष सूँ रहित हैं, बैरागी निरबन्ध ।
सहजो इच्छा ना रही, माया ब्रह्म की संध ॥३३॥
आसन संजम साध करि, साधे प्रान अपान[1] ।
सहजो मुद्रा जो सधे, तौ जोगी परवान ॥३४॥
तीनों बन्ध लगाय के, अनहद सुनै टकोर ।
सहजो सुन्न समाधि में, नहीं साँझ नहिं भोर ॥३५॥
ना सुख बिद्या के पढ़े, ना सुख बाद बिबाद ।
साध सुखी सहजो कहै, लागै सुन्न समाध ॥३६॥
मुए दुखी जीवत दुखी, दुखी भूख आहार ।
साध सुखी सहजो कहै, पायौ नित्त बिहार ॥३७॥
चाह दुखी आसा दुखी, महा दुखी अज्ञान ।
साध सुखी सहजो कहै, पायौ केवल ज्ञान ॥३८॥
धनवन्ते सब ही दुखी, निर्धन हैं दुख रूप ।
साध सुखी सहजो कहै, पायौ भेद अनूप ॥३९॥
रंक दुखी राजा दुखी, दुखी सकल संसार ।
साध सुखी सहजो कहै, पाया भेद अपार ॥४०॥
ना सुख दारा सुत महल, ना सुख भूप भये ।
साध सुखी सहजो कहै, तृस्ना रोग गये ॥४१॥

द्वादस प्रकार के बचन साध के

१ मीठी बोली ।	४ सीतल सुगन्ध बोली	७ बिघ्न-बिदार बोली	१० भक्ति दृढ़ावन बोली
२ चरपरी बोली ।	५ महाफूल बोली ।	८ शुद्ध सुख सज्जन बोली	११ स्थिर बोली ।
३ अमृत-बचन बोली	६ सलिल बोली ।	९ भर्म-निवारन बोली	१२ साँची बोली ।

(१) प्राण और अपान वायुओं के नाम हैं—प्राण अंतर खिंचने वाली स्वासा को और अपान बाहर चलने वाली स्वासा को कहते हैं, जिनको प्राणायाम के अभ्यास में साधना पड़ता है ।

द्वादस प्रकार के बचन दुष्ट के

१ पाहन बोली । ४ अग्नि सरूप बोली । ७ खट्टी बोली । १० भरमिक बोली ।
२ काँटेदार बोली । ५ अकड़े खटक बोली । ८ कड़ुई दुर्गंध बोली । ११ निगुरी बोली ।
३ बिष भुवंग बोली । ६ हिया-बेध बोली । ९ झूठी बोली । १२ डिगमिगाट बोली

बैराग उपजावन का अंग

॥ दोहा ॥

सहजो भज हरि नाम कूँ, तजो जगत सूँ नेह ।
अपना तो कोइ है नहीं, अपनो सगो न देह ॥ १ ॥
यही कही गुरुदेवजू, यही पुकारैं सन्त ।
सहजो तज या जगत कूँ, तोहि तजैगो अन्त ॥ २ ॥
कलह कलपना दुख घना, सदा रहै मन भंग ।
अकस[1] भरे कूँ छोड़िये, सहजो जग बेढंग ॥ ३ ॥
जैसे सँड़सी लोह की, छिन पानी छिन आग ।
ऐसे दुख सुख जगत के, सहजो तू मत पाग ॥ ४ ॥
अचरज जीवन जगत में, मरिबो साँचो जान ।
सहजो अवसर जात है, हरि सूँ ना पहिचान ॥ ५ ॥
जग से या जग में पगा, जग सँग दीन्हे प्रान ।
राम तजै जग सूँ रचै, सहजो निस्चय हान ॥ ६ ॥
झूठा नाता जगत का, झूठा है घर बास ।
यह तन झूठा देख कर, सहजो भई उदास ॥ ७ ॥
जब लग चावल धान में, तब लग उपजै आय ।
जग छिलके कूँ तजि निकस, मुक्ति रूप है जाय ॥ ८ ॥
कुटँब सँगाती बीच में, आदि अन्त नहिं होय ।
बीच मिले बिच ही गये, सहजो संग न कोय ॥ ९ ॥
सहजो स्वारथ सब लगे, दारा सुत औ बीर ।
जीवत जोतैं बैल ज्यों, मुए चढ़ावैं सोर[1] ॥१०॥

(१) बैर । (२) जीते जी तो कड़ी मेहनत लेते हैं और मरने पर अपने मतलब के लिए मन्नत चढ़ाते हैं।

कोई किसी के संग ना, रोग मरन दुख बन्ध ।
इतने पर अपनो कहैं, सहजो ये नर अन्ध ॥११॥
दरद बटाय सकैं नहीं, मुए न चालैं साथ ।
सहजो क्योंकर आपने, सब नाते बरबाद ॥१२॥
मर बिछुड़े जो कुटँब सूँ, बहुर न देखै आय ।
महल द्रब्य सन्तान कूँ, सहजो पचै बलाय ॥१३॥
मरि बिछुड़न यों होइगो, ज्यों तरवर सूँ पात ।
सहजो काया प्रान यों, मुख सेती ज्यों बात ॥१४॥
सहजो जीवत सब सगे, मुए निकट नहिं जायँ ।
रोवैं स्वारथ आपने, सुपने देख डरायँ ॥१५॥
सहजो धन माँगे कुटँब, गाड़ा धरा बताय ।
जो कछु है सो दे हमैं, फिर पाछे मरि जाय ॥१६॥
मुख देखे ढाँपै भजे, तड़ दे तोड़ै नेह ।
सहजो पति सुत निज हितू, जारि करैंगे खेह ॥१७॥
काढ़ काढ़ बेगी कहैं, भीतर बाहर लोय ।
जीव छुटे सहजो कहै, तन का सगा न कोय ॥१८॥
यह मन्दिर यह नारि है, यह धन यह सन्तान ।
तेरो ना सहजो कहै, काहे करत गुमान ॥१९॥
जन्म जुवा सों हारिहो, कियो न लाहा मूल ।
डार पात फल सींच कर, सहजो काटत मूल ॥२०॥
सहजो गुरु परताप सूँ, ऐसी जान पड़ी ।
नहीं भरोसा स्वास का, आगे मौत खड़ी ॥२१॥
भीतर का भीतर खुलै, कै बाहर खुलि जाय ।
देह खेह ह्वै जायगी, जैहो जन्म गँवाय ॥२२॥
स्वासा दीपक के बुझे, होत अँधेरी देह ।
सहजो सूनी प्रान बिनु, जब कैसो हरि नेह ॥२३॥

सहजो फिर पछितायगो, स्वास निकसि जब जाय।
जब लग रहै सरीर में, राम सुमिर गुन गाय ॥२४॥
स्वास खजानो जातु है, ता की सोधो नाहिं।
सहजो खर्चो का रह्यो, कर हिसाब घर माहिं ॥२५॥
सहजो नौबत स्वास की, बाजत है दिन रैन।
मूरख सोवत है महा, चेतन कूँ नहिं चैन ॥२६॥
हिरनाकुस से ह्वै मिटे, दुर्जोधन सिसुपाल।
कुंभकरन रावन गये, सहजो खाया काल ॥२७॥
निस्चै मरना सहजिया, जीवन की नहिं आस।
क टूटी सी झोपड़ी, कै मन्दिर में बास ॥२८॥
कै गरीब सिर टोकरी, क सिर छत्तर होय।
जन्म मरन में एक से, सहजो भाँति न दोय ॥२९॥
मरना है रहना नहीं, जाना वाही ठौर।
सहजो कै कङ्गाल हो, कै हो द्रव्य कड़ोर ॥३०॥
आपन हूँ थिर होहिं जो, करैं और को सोग।
सहजो साथी नाव के, सभी बटाऊ लोग ॥३१॥
बैठि बैठि बहुतक गये, जग तरवर की छाँहिं।
सहजो बटाऊ बाट के, मिलि मिलि बिछुड़त जाहिं ॥३२॥
यह रस्ता बहता रहै, थमै नहीं छिन एक।
बहु आवैं बहु जातु हैं, सहजो आँखन देख ॥३३॥
जग देखत तुम जावगे, तुम देखत जग जाय।
सहजो योंही रीति है, मत कर सोच उपाय ॥३४॥
मुए सो काया जारई, बहुरि न मिलिहै आय।
रोये तें कहा होत है, सहजो झुरै बलाय ॥३५॥
झुरि झुरि के पिंजर भये, रोय गँवाये नैन।
मरे गये सो ना मिले, सहजो सुने न बैन ॥३६॥

जो रोये सूँ बाहुरे, तौ रोवौ दिन रात।
तन छीजे वह न मिले, सहजो कूड़ी बात ॥३७॥
काहे कूँ रोवत रहौ, कल्प न होवे काज।
सहजो मुए सो मरि गये, आवैं काल्ह न आज ॥३८॥
देह निकट तेरे पड़ी, जीव अमर है निच्च।
दुइ में मूवा कौन सा, का सूँ तेरा हित्त ॥३९॥
जो तेरा हित देह सूँ, नख सिख ताही[1] खंड।
जीव अमर सहजो कहै, ब्यापक और अखंड ॥४०॥
तेरा थानी क्यों मुवा, क्यों न रखा गहि बाहिं।
सहजो बहुतक मिलि छुटे, चौरासी के माहिं ॥४१॥
कभुवक तेरा बाप है, कभुवक तेरा पूत।
कभुवक तेरा मित्र है, कभुवक तेरा सूत[2] ॥४२॥
जो तेरे सँग प्यार था, जाता वाके साथ।
कै वाही कूँ राखता, सहजो गहि कर हाथ ॥४३॥
कलप रोय पछिताय थक, नेह तजोगे कूर।
पहिले ही सूँ जो तजे, सहजो सो जन[3] सूर ॥४४॥
यों खाता यों सोवता, मीठे कहता बोल।
यह बिचार तू मत करै, चित रहै डाँवाडोल ॥४५॥
बैठि पहिरि यों चालता, बस्तर भूषन लाल।
यह बिचार तू मत करै, छल रूपी जग जाल ॥४६॥
आगे रो रो क्या किया, अब क्यों रोवे भाँड।
संग न आया ना चलै, यह जग झूठी माँड ॥४७॥
आगे मुए सो जा चुके, तू भी रहै न कोय।
सहजो पर कूँ क्या झुरै, आपन ही कूँ रोय ॥४८॥

---

(१) नाहीं। (२) शत्रु, दूत। (३) सावत।

बहुत गई थोड़ी रही, यह भी रहसी नाहिं।
जन्म जाय हरि भक्ति बिनु, सहजो झुर मन माहिं ॥४६॥

कर्म अनुसार योनि

॥ दोहा ॥

उपजि उपजि फिर फिर मरौ, जम दे दारुन दुक्ख।
लाज नहीं सहजो कहै, धिर्ग तुम्हारो मुक्ख ॥५०॥
पसु पंछी नर सुर असुर, जलचर[1] कीट पतंग।
सबही उतपति कर्म की, सहजो नाना अंग ॥५१॥
कर्मन के प्रेरे फिरौ, जन्म जन्म दुख होय।
मुक्ति बिचारो सहजिया, आवागवन जु खोय ॥५२॥
जन्म चलो ही जातु है, ये दिन आछे जाहिं।
जीवत जागह ना करी, बैठोगे केहि ठाहिं ॥५३॥
सहजो रहै मन बासना, तैसी पावै ठौर।
जहाँ आस तहँ बास है, निस्चै करी कड़ोर ॥५४॥
देह छूटै मन में रहै, सहजो जैसी आस।
देह जन्म जैसो मिलैं, जैसे ही घर बास ॥५५॥

॥ चौपाई ॥

जा की आस रहै मन्दिर में। होकर घूँस बसै सो घर में॥
रहै बासना द्रब्य मँझारा। जन्मै नाग होय पुनि कारा॥
रहै बासना तिरिया माहीं। कोटी[2] स्वान धरै तन आई॥
रहै बासना पुर्षा बर की। कुतिया होय चूहड़े[3] घर की॥
जा की रहै पुत्र में आसा। सूवर जन्म नीच घर बासा॥
जा का मन रहै राज दुवारे। हस्ती हो सिर मेलै छारे॥
रहै बासना नीर पियासी। मीन देह धरि जल की बासी॥
रहै बासना बाहन संगा। होय जन्म ले बाहन[4] अंगा॥

(१) थिरचर। (२) योनि। (३) भंगी। (४) घोड़ा।

जहाँ बासना जित ही जाई। यह मत बेद पुरानन गाई ॥
चरनदास गुरु मोहिं बताई। तजो बासना सहजोबाई ॥

॥ दोहा ॥

सहजो लोक प्रलोक को, नहीं बासना ताहि।
सो वह ब्रह्म सरूप है, सागर लहर समाय ॥५७॥
जा की गुरु में बासना, सो पावै भगवान।
सहजो चौथे पद बसै, गावत बेद पुरान ॥५८॥
परमेसुर की बासना, अन्त समय मन माहिं।
तन छूटे हरि कूँ मिलै, उपजै बिनसै नाहिं ॥५६॥
साध संग की बासना, जेहि घट पूरी सोय।
मनुष जन्म सतसंग मिलै, भक्ति परापत होय ॥६०॥
सहजो हरि के नाम की, रहै बासना बीर।
चौरासी संकट कटै, जम की छूटै पीर ॥६१॥
चौरासी काया पहिर, दुख सहे नाना त्रास।
भली भई अब के कुसल, चरनदास की आस ॥६२॥
चौरासी के त्रास सुनि, जम किंकर की मार।
सहजो आई गुरु सरन, सुमिर्यो सिरजनहार ॥६३॥
धन जोबन सुख सम्पदा, बाहर की सी छाहँ।
सहजो आखिर धूप है, चौरासी के माहँ ॥६४॥
चौरासी जोनी भुगत, पायौ मनुष सरीर।
सहजो चूके भक्ति बिनु, फिर चौरासी पीर ॥६५॥

जन्म दशा

॥ दोहा ॥

जन्म मरन अब कहत हूँ, कहूँ अवस्था चार।
चौरासी जमदंड कूँ, भिन्न भिन्न बिस्तार ॥६६॥
चरनदास अज्ञा दई, सहजो परगट गाय।
ता सूँ पढ़ि सुनि जीव की, सकल बन्ध कटि जाय ॥६७॥

॥ चौपाई ॥

पापी जीव गर्भ जब आवै। भवन अँधेरे बहु दुख पावै ॥
तल मूड़ी ऊपर को पाऊँ। मुख लिगी[1] और बिष्टा ठाऊँ ॥
जठर अगिन इक रस जहँ लागी। अधिक तपै जहँ पतित अभागी ॥
खट्टा मीठा माता खावै। लागि छुरी सी बहु दुख पावै ॥
आप दुखी माता दुख पाया। दसैं महीने जग में आया ॥
जग जंजाल देखकर रोया। नर नारी मिलि सभी बिगोया ॥
माया मोह पवन लगि भूला। सहजो गोद पालने झूला ॥
नाते सभी लगे उठि झूठे। पड़ा बन्ध में कैसे छूटे ॥६८॥

॥ दोहा ॥

सब नाते उठि उठि लगे, रोम रोम लिया बन्ध।
सहजो यह भी रलि मिला. फिर फिर भूला अन्ध ॥६९॥

॥ चौपाई ॥

कोई कहे मैं इसकी माई। कोई कहे लाला की दाई ॥
कोई कहे यह सुन्दर हीरा। गोद खेलाऊँ अपना बीरा ॥
कोई कहे मैं या का बापू। बालक पाया पुत्र प्रतापू ॥
कोई कहै मैं या की बूवा। चाचा कहै भतीजा हूवा ॥
कोई कहै यह मेरा भाई। कोई कहै मैं दादी आई ॥
कोई कहै मैं मा की बहिनी। कोई कहै मैं या की नानी ॥
कोई कहै मैं इसका मामा। लाया खाँड़ खड़ूले जामा ॥
कोई कहै मैं या का नाना। मामी ने भांजा करि जाना ॥
कोई कहै यह पोता बाल[2]। कोई कहै यह मेरा लाल[3] ॥७०॥

॥ दोहा ॥

सब नाते लिये मान कर, घेरा घेरी घेर।
झूठे साँचे से लगैं, सुपने कंचन मेर[4] ॥७१॥

---

(१) मूत्र या पेशाब। (२) बाला। (३) साला। (४) पहाड़।

पित्र देवता गोतिया, गरह नछत्तर सौन[1]।
सहजो बन्धन बँधि गये, ताहि छुड़ावे कौन ॥७२॥

॥ चौपाई ॥

गूँगा घी कहना जब सीखा। सेढ़ू नाम मदारी भीखा ॥
माय बाप ले नाम पुकारैं। जब किलकै तब तन मन वारैं ॥
मुख चूमैं और कंठ लगावैं। देवी देवा बहुत मनावैं ॥
रोग होय तो बहु दुख पावैं। ले ले जहाँ तहाँ पग धावैं ॥
कबहूँ झरि पिंजर ह्वै जावै। कबहूँ खाँसी बहुत सतावै ॥
चलै पेट कबहूँ बहु रोवै। खीजै बहुत नेक नहिं सोवै ॥
ज्वर कबहूँ दूखैं दोउ नैना। पुनः पुनः[2] दुख लहै न चैना ॥
निकसै दाँत दाढ़ दुख भैया। जबसूँ जन्म सदा दुख पैया ॥७३॥

॥ दोहा ॥

दुक्ख सुक्ख बढ़ने लगा, पाँच बरस भइ देह।
जब पढ़ने बैठाइया, अपनी बिद्या लेह ॥७४॥

॥ चौपाई ॥

बालक का चित खेल मँझारे। ज्यौं ज्यौं पाधा छड़ियन मारै ॥
बैठि रहे तो पकड़ बुलावै। बाँधि बाँधि दुख देत पढ़ावै ॥
मन ही मन सोचै दुख भारी। दुर्जन भये बाप महतारी ॥
दुख दे दे कर बहुत पढ़ाया। खोट कपट में घना सँधाया ॥
ऐसे भया बरस द्वादस का। रहा नहीं उनहूँ के बस का ॥
मन में आवै सो पुनि करई। मात पिता सूँ नेक न डरई ॥
खेलै खेल बहुत परकारा। सबही विधि लड़कापन हारा ॥
बालपना हस खेल गँवाया। गुरु की टहल सरन नहिं आया ॥
पाप पुन्न कूँ ना पहिचाना। सहजो कर्ता राम न जाना ॥७५॥

---

(१) शायद "सरवन" से मतलब है जो बड़े भारी भक्त माँ बाप के थे और उनको बहँगी पर लिये फिरते थे। इनका चित्र सावन में लोग दीवार पर लिख कर पूजते हैं।
(२) बार-बार।

॥ दोहा ॥

तरुनापा फिर आइया, पाँच भूत लै संग ।
जोबन मद मातो रहै, पियै बिषय को रंग ॥७६॥

॥ चौपाई ॥

तरुनापा भया सकल सरीरा । अंधा भया बिसरि हरि हीरा ॥
बिषय बासना के मद मातो । अहं आपदा के रंग रातो ॥
मूँछ मरोड़ अकड़ता डोलै । काहू तें मुख मीठ न बोलै ॥
कहै बराबर मेरे नाहीं । बुद्धिवान कोइ या जग माहीं ॥
मैं बलवन्त सबन पर भारी । द्रब्य कमाऊँ नरन अगारी ॥
महा दुखी सुख मान लियो है । मोह अमल अज्ञान पियो है ॥
भया कुटम्बी जब सुख कैसा । सहजो बन्ध[1] पड़ै कोइ जैसा ॥
सुत पुत्री उपजे मरि जावै । सोच सोच तन मन दुख पावै ॥७७॥

॥ दोहा ॥

द्रब्यहीन भटकत फिरै, ज्यों सराय को स्वान ।
झिड़कि दियो जेहि घर गया, सहजो रह्यौ न मान ॥७८॥

॥ चौपाई ॥

द्रब्यहीन सब को मुख जोहै । जाति बरन देखै नहिं को है ॥
निहुरि निहुरि ज्यों बन्दर नाचै । राम तजो इन बातन राचै ॥
बेटी ब्याह जोग घर माहीं । और भूखे सब कित सूँ खाहीं ॥
कहै हवेली एक बनाऊँ । अपने कुल में इज्जत पाऊँ ॥
कलपै बहुत सीस धुनि माथा । सहजो दुखी कुटँब के साथा ॥
आवै ना सतसंगति माहीं । कुटँब जाल छुटकारा नाहीं ॥
हरि की भक्ति नहीं लौ लाई । दारा सुत धन की गुमराई[2] ॥
दुख धन्धा करि जन्म गँवाया । सहज सहज बूढ़ापन आया ॥७९॥

वृद्ध अवस्था

॥ दोहा ॥

सहजो धौले[3] आइया, झड़ने लागे दाँत ।
तन गुंझल[4] पड़ने लगो, सूखन लागी आँत ॥८०॥

(१) कैदखाना । (२) गुमराही, अभिमान । (३) सफेद बाल । (४) झुर्री, गुलझट ।

॥ चौपाई ॥

डबडबाय आँखन में पानी । बूढ़े तन की यही निसानी ॥
नैनन में जल भरि भरि आवै । दाँत हिलैं दारुन दुख पावै ॥
गोड़े थके दरद बाई का । कफ खाँसी हिये दुख वाही का ॥
खों खों करै नींद नहिं आवै । आप जगै और लोग जगावै ॥
बेबस इन्द्री सिथल भई हैं । अब क्या जीतैं सहज गई हैं ॥
पूत बहू लख नाक चढ़ावैं । बहुत पुकारै निकट न आवैं ॥
निहुरि चलै लकड़ी लै हाथा । स्वजन कुटँब नहिं दुख के साथा ॥
असी बरस लग बीते साठी[1] । सहजो कहै बहक बुधि नाठी[2] ॥८१॥

॥ दोहा ॥

असी बरस ऊपर लगी, बिरध अवस्था होय ।
आगे की थिरता नहीं, पिछलि गइ सब खोय ॥८२॥
तीन अवस्था बीत कर, चौथी आई मन्द ।
बृद्ध अवस्था सिर चढ़ी, तहु न चेता अन्ध ॥८३॥

॥ चौपाई ॥

लागी बिरध अवस्था चौथी । सहजो आगे मौत हि मौती ॥
हाथ पैर सिर काँपन लागे । नैन भये बिनु जोति अभागे ॥
सर्वन तें कछु सुनियत नाहीं । दाँत डाढ़ नहिं मुख के माहीं ॥
कंठ रुके कफ बाई घेरे । हाड़ हाड़ सब दुख में पेरे ॥
बात कहै घर बाहर हाँसा । कुटँब दियो मिल पौरी[3] बासा ॥
मन चालै सब रस कूँ तरसै । नर नारी कोइ हितू न दरसै ॥
आप आप कूँ इत उत डोलै । बिन पौरुष कोइ मुखहुँ न बोलै ॥
जिन कारन पचिया दिन राती । बात करैं नहिं कुटँब सँगाती ॥
सुत पोते दुर्गंध घिनावैं । टहल करैं तब नाक चढ़ावैं ॥
तिन के मोह तजे जगदीसा । अब मन में कलपै धुनि सीसा ॥
चरनदास गुरु कही बिसेषी । हरि बिन यों जग जाता देखी ॥८४॥

(१) सठिया गया । (२) जाती रही । (३) द्वारे ।

॥ दोहा ॥

सेत रोम सब हो गये, सूख गई सब देह ।
सहजो वह मुख ना रहा, उड़ने लागी खेह ॥८५॥
सहजो इन्द्री सब थकी, तन पौरुष भये छीन ।
आसा तृस्ना ना घटी, सहज बचन भये दीन ॥८६॥
चार अवस्था खो दई, लियो न हरि को नाम ।
तन छूटे जम कूटि है, पापी जम के ग्राम ॥८७॥
आय जगत में क्या किया, तन पाला के पेट ।
सहजो दिन धंधे गया, रैन गई सुख लेट ॥८८॥

मृत्यु दशा

॥ दोहा ॥

सहजो मृत्यू आइया, लेटा पाँव पसार ।
नैन फटे नाड़ी छुटी, सोंही[1] रहा निहार ॥८९॥

॥ चौपाई ॥

पित सरका बाई घिर[2] आया । बाय सरक कफ ठौर बसाया ॥
कफ सरका गल रोक लिया है । कंठ रुके कोइ नाहिं जिया है ॥
घुटर घुटर जब करने लागा । चेतनता सब तन का भागा ॥
नाते घिर घिर सब ही आये । थोथे अपने नेह जनाये ॥
आँखन सूँ जल भरि भरि लावैं । आपस में सब मोह दिखावैं ॥
हाय हाय कर कोई बोलै । कोई ढूँढ़त औषध डोलै ॥
कोई कहै कछु द्रव्य बतावो । धरा ढका कछु करज दिखावो ॥
वाकूँ सुधि नहिं अपने तन की । जम किंकर मारत हैं घन की॥९०॥

॥ दोहा ॥

जम की सूरत देख करि, सुधि बुधि गई नसाय ।
सहजो जो संकट बन्यो, मुख सूँ कह्यो न जाय ॥९१॥
सहजो मिरतू के समय, पीड़ा होय अपार ।
बीछू एक हजार ज्यों, डंक लगै इकसार ॥९२॥

(१) सन्मुख, सामने । (२) घर ।

॥ चौपाई ॥

कोई कहै भज रामहि रामा । सहजो कहै कौन अब कामा ॥
आगू सूँ हरि सुमरे नाहीं । पचि पचि मुआ कुटँब के माहीं ॥
हिरदे रखता राम सँगातो । तौ रच्छा अब सब बनि आतो ॥
आगू सूँ अभ्यास जो रहता । तौ अब मुख सूँ हरि हरि कहता ॥
तन की पीड़ा सब मिटि जाती । जम को तो पै कहा बसाती ॥
राम राम मरते तू कहता । जो आगू सूँ कहता रहता ॥
तैं मन दिया कुटँब के साथा । हो बैठा घर बाहर नाथा ॥
अपना किया भुगत रे जोया । जो गुरु पूरा ढूँढ़ न कीया ॥६३॥

॥ दोहा ॥

पकरि बाँधि जम लै चले, धर्मराय के पास ।
कई बार आगे गये, छप्पन जहाँ तिरास ॥६४॥
कई भाँति के दंड हैं, सहजो नाना त्रास ।
नरक कुण्ड दुख भुगत करि, फिर चौरासी बास ॥६५॥

काल मृत्यु

॥ दोहा ॥

काल मृत्यु अब कहत हूँ, चौंक उठै अज्ञान ।
समझैगा कोइ साध जन, कै कोइ विद्यावान ॥६६॥
जगत बिषय की बासना, हरि सूँ नाहीं हेत ।
काल मृत्यु कोई मरै, निस्चै होय परेत ॥६७॥
चार पहर का तेल भर, राखै दीवा बाल ।
तेल निबड़ बाती बुझै, सहजो पूरा काल ॥६८॥
कै मानुष कै बायु सूँ, कै पतंग करि देय ।
तेल रहै लोई बुझै, अकाल मृत्यु यों होय[1] ॥६९॥

॥ चौपाई ॥

बूढ़ा बाला कै ह्व तरुना । कालमृत्यु इक कालहि मरना ॥१००॥

---

(1) कहि तेय ।

अकाल मृत्यु

॥ चौपाई ॥

काल मौत जो आगे गाई। अकाल मृत्यु कहै सहजो बाई ॥
सस्तर मौत मरै जो कोई। यह भी मौत अकालहि होई ॥
बिगड़ै रोग पत्थ नहिं कीन्हो। यह भी मौत अकालहि चीन्हो ॥
कोई भाँति जो बिष खा मरै। और जीवत पावक में जरै ॥
जल में डूबि जाय कोइ कैसे। लागे प्रेत मरै कोइ ऐसे ॥
साँप डसे छूटै जो काया। महलापतनी[1] तें दबि जाया ॥
कोऊ ठग फाँसी दे मारै। जंगल पसू तोड़ जो डारै ॥
ये सब मृत्यु अकाल दिखाई। मुए सुँ योनिपिसाचर पाई ॥१०१॥

॥ दोहा ॥

प्रेत योनि कूँ पाय कै, दुखी भये अज्ञान।
आप दुखी दुख देत हैं, उठ गइ सब पहिचान ॥१०२॥

॥ चौपाई ॥

पेट बड़ा मुख सुई समाना। भूख प्यास में फिरै दिवाना ॥
भटकत फिरै ठौर नहिं पावै। लागत फिरै जूतियाँ खावै ॥
बासा लहै कुचील ठिकाना। आप कुचील कुचीलहि बाना ॥
पाप करै हरि कूँ बिसरावै। सहजो कहै सो यह गति पावै ॥१०३॥

॥ दोहा ॥

रही सो आयुर्दा कटै, मृत्यु लोक के माहिं।
जब हो पूरी हो चुकै, बाँधे नर्कहि जाहिं ॥१०४॥
अति कुचील वह ठौर है, महा घोर भयमान।
त्राहि त्राहि पापी करैं, सुनैं न कानों कान ॥१०५॥

॥ चौपाई ॥

बहुतक घोर नरक में पड़े। बहुतक थंभन बाँधे खड़े ॥
बहुतन के सिर आरे धरिये। बहुतक पापी गुरजों[2] गढ़िये ॥
बहुतों का सिर नीचे किया। ऊपर बाँधि पाँव जो दिया ॥

---

(१) मकान के गिरने से। (२) गदा।

तले कड़ाहे तेल जलाया। भर भर करछे छौंक लगाया॥
बहुतन पकरि कुण्ड में डारे। जिन सिर कागा चोंचन मारे॥
कहँ लग कहूँ त्रास बहुतेरे। छप्पन त्रास कहे गुरु मेरे॥
जम पेरत हैं सकल मँझारी। सबही भुगतैं नर कहा नारी॥
फिरि फिरि मूँड़ा जाय कुटावैं। सहजो कहै नहीं सकुचावैं॥१०६॥

॥ दोहा ॥

जम का लिंग सरीर है, पापी लिंग सरीर।
जैसे कूँ तैसे गहै, वैसी वा कूँ पीर॥१०७॥
त्रास दहन जम के कहे, सुन भजियो नर नारि।
अब चौरासी कहत हूँ, भिन्न भिन्न बिस्तार॥१०८॥

॥ चौपाई ॥

नौलख जल के जीव बताये। बहुत जन्म इन में भुगताये॥
पंछी जाति कही दस लाखा। आगू सूँ चलि आई साखा॥
ग्यारह लख कृमकीट लखाऊँ। जिमीं माहिं जो चलत दिखाऊँ॥
बीस लाख थावर बिस्तारा। भरमत भरमत ही पचि हारा॥
तीस लाख पसु जोनि सुनाया। घनी बार सो पहिरी काया॥
चारहु लाख मनुक्खा देही। लख चौरासी यह सुनि लेही॥
इक इक बार सबै तुम भये। कहिये कहा बहुत दुख सहे॥
दुख खे खे करि यह तन पायौ। सहजो हरि गुरु बिना गँवायौ॥
चरनदास गुरु पूरे पाये। चौरासी जम दंड छुटाये॥१०९॥

नाम का अंग

॥ दोहा ॥

लख चौरासी यह कही, फेर फेर भुगतन्त।
जन्म मरन छूटै नहीं, बिना सरन भगवन्त॥ १ ॥
जज्ञ दान तीरथ करै, पूजा भाँति अनेक।
मुक्ति न पावै सहजिया, बिना भक्ति हरि एक॥ २ ॥

इन्दर की पदवी मिलै, और ब्रह्म की आव[१]।
आगे तौं भी मरन है, सहजो सकल बहाव[२] ॥ ३ ॥
राम नाम ले सहजिया, दीजै सर्ब अकोर[३]।
तीन लोक के राज लों, अन्त जाहुगे छोर[४] ॥ ४ ॥
बिना भक्ति थोथे सभी, जोग जज्ञ आचार।
राम नाम हिरदे धरो, सहजो यही बिचार ॥ ५ ॥
यह अवसर दुर्लभ मिलै, अचरज मनुषा देह।
लाभ यही सहजो कहै, हरि सुमिरन करि लेह ॥ ६ ॥
एक घड़ी का मोल ना, दिन का कहा बखान।
सहजो ताहि न खोइये, बिना भजन भगवान ॥ ७ ॥
पारस नाम अमोल है, धनवन्ते घर होय।
परख नहीं कंगाल कूँ, सहजो डारै खोय ॥ ८ ॥
सहजो जा घट नाम है, सो घट मंगल रूप।
राम[५] बिना धिक्कार है, सुन्दर धनवंत भूप ॥ ९ ॥
सहजो नौका नाम है, चढ़ि[६] के उतरौ पार।
राम सुमिरि जान्यो नहीं, ते डूबे मँझधार ॥१०॥
सहजो भवसागर बहै, तिमिर बरस घर घोर।
ता में नाम जहाज है, पार उतारै तोर ॥११॥
पावक नाम जलाइ है, पाप ताप दुख दुन्द।
राम सुमिर सहजो कहै, जो बिसरै सो अन्ध ॥१२॥
कनक दान गज दान दे, उनन्चास भू दान।
निस्चै करि सहजो कहै, ना हरि नाम समान ॥१३॥
मेंह सहै सहजो कहै, सहै सीत और घाम।
पर्बत ठो तप करै, तौ भी अधिको नाम ॥१४॥

(१) आयु। (२) बहाउ। (३) घूस, रिश्वत—यहाँ मतलब न्यौछावर से है। (४) छोड़। (५) नाँव। (६) गहि गहि।

चरनदास हरि नाम को, महिमा कही अपार।
सो सहजो हिरदे धरी, अचल धारना धार ॥१५॥
सहजो सुमिरन कीजिये, हिरदे माहिं दुराय[1]।
होठ होठ सूँ ना हिलै, सकै नहीं कोइ पाय ॥१६॥
राम नाम यों लीजिये, जानै सुमिरनहार।
सहजो कै कर्तार ही, जानै ना संसार ॥१७॥
बैठे लेटे चालते, खान पान ब्यौहार।
जहाँ तहाँ सुमिरन करै, सहजो हिये निहार ॥१८॥
जागत में सुमिरन करै, सोवत में लौ लाय।
सहजो इकरस ही रहै, तार टूटि नहिं जाय ॥१९॥
आठ पहर सुमिरन करै, बिसरै ना छिन एक।
अष्टादस और चार में, सहजो यही बिसेष ॥२०॥
सहजो सुमिरन सब करैं, सुमिरन माहिं बिबेक।
सुमिरन कोई जानि है, कोटों मद्धे एक ॥२१॥
जन्म मरन बन्धन कटै, टूटै जम की फाँस।
राम नाम ले सहजिया, होय नहीं जग हाँस ॥२२॥
चौरासी के दुख छुटैं, छप्पन नर्क तिरास।
राम नाम ले सहजिया, जम पुर मिलै न बास ॥२३॥
गर्भ बास संकट मिटै, जठर अगिन की आँच।
राम नाम ले सहजिया, मुख सूँ बोलो साँच ॥२४॥
सील छिमा संतोष गहि, पाँचो इन्द्री जीत।
राम नाम ले सहजिया, मुक्ति होन की रीत ॥२५॥
काम क्रोध लोभ मोह मद, तजि भज हरि को नाम।
निस्चै सहजो मुक्ति है, लहै अमरपुर धाम ॥२६॥

(१) छिपाकर, गुप्त।

काम क्रोध मोह लोभ तन, ले सुमिरै हरि नाम ।
मुक्ति न पावै सहजिया, ना रीझैंगे राम ॥२७॥
कामो मति भिष्टल[१] सदा, चलै चाल बिपरीत ।
सील नहीं सहजो कहै, नैनन माहिं अनीत ॥२८॥
सदा रहै चित भंग ही, हिरदे थिरता नाहिं ।
राम नाम के फल जिते, काम लहर बहि जाहिं ॥२९॥
सहजो क्रोधी अति बुरो, उलटो समझै बात ।
सबही सूँ ऐंठो रहै, करै बचन की घात ॥३०॥
कूकर ज्यों भूसत फिरै, तामस मिलवाँ बोल ।
घर बाहर दुख रूप है, बुधि रहै डाँवाडोल ॥३१॥
मन मैला तन छीन है, हरि सूँ लगै न नेह ।
दुखी रहै सहजो कहै, मोह बसै जा देह ॥३२॥
मोह मिरग काया बसै, कैसे उबरै खेत ।
जो बोवै सोई चरै, लगै न हरि सूँ हेत ॥३३॥
नीच लोभ जा घट बसै, झूठ कपट सूँ काम ।
बौरायो चहुँ दिसि फिरै, सहजो कारन दाम ॥३४॥
द्रब्य हेत हरि कूँ भजै, धन ही की परतीत ।
स्वारथ ले सब सूँ मिलै, अन्तर की नहिं प्रीत ॥३५॥
अभिमानी मुख धूर है, चहै बड़ाई आप ।
डिंभ लिये फूलो फिरै, करतो डरै न पाप ॥३६॥
प्रभुताई कूँ चहत हैं, प्रभु को चहै न कोइ ।
अभिमानी घट नीच है, सहजो ऊँच न होय ॥३७॥

नन्हा महा उत्तम का अंग

॥ दोहा ॥

धन छोटापन सुख महा, धिरग बड़ाई ख्वार[२] ।
सहजो नन्हा हूजिये, गुरु के बचन सम्हार ॥ १ ॥

---

(१) भ्रष्ट, गन्दी । (२) खराब ।

सहजो तारे सब सुखी, गहै[1] चन्द और सूर।
साधू चाहे दीनता, चहै बड़ाई कूर[2] ॥ २ ॥

अभिमानी नाहर बड़ो, भरमत फिरत उजाड़।
सहजो नन्ही बाकरी, प्यार करै संसार ॥ ३ ॥

सीस कान मुख नासिका, ऊँचे ऊँचे नाँव।
सहजो नीचे कारने, सब कोउ पूजे पाँव ॥ ४ ॥

नन्हो चींटी भवन में, जहाँ तहाँ रस लेह।
सहजो कुञ्जर अति बड़ो, सिर में डारै खेह ॥ ५ ॥

सहजो चन्दा दूज का, दरस करै सब कोय।
नन्हे सूँ दिन दिन बढ़ै, अधिको चाँदन होय ॥ ६ ॥

बड़ा भये आदर नहीं, सहजो आँखिन देख।
कला सभी घट जायगी, कछू न रहसी रेख ॥ ७ ॥

सहजो नन्हा बालका, महल भूप के जाय।
नारी परदा ना करैं, गोदहि गोद खेलाय ॥ ८ ॥

बड़ा न जाने पाइहै, साहेब के दरबार।
द्वारे ही सूँ लागि है, सहजो मोटी मार ॥ ९ ॥

बारे दीवे चाँदना, बड़ा भये अँधियार[3]।
सहजो तृन हलका तिरै, डूबै पत्थर भार ॥१०॥

भली गरीबी नवनता, सकै नहीं कोइ मार।
सहजो रुई कपास की, काटै ना तरवार ॥११॥

चरनदास सतगुरु कही, सहजो कूँ यह चाल।
सको तो छोटा हूजिये, छूटै सब जंजाल ॥१२॥

साहन कूँ तो भय घना, सहजो निर्भय रंक।
कुञ्जर के पग बेड़ियाँ, चींटी फिरै निसंक ॥१३॥

---

(१) ग्रहन लगता है। (२) दुष्ट। (३) दीवा या रोशनी "बढ़ा" देना मुहावरे में चिराग़ बुझा देने को कहते हैं—इस साखी का अर्थ यह है कि नन्हा सा दीवा जब बाला गया तो चाँदना करता है और जब "बढ़ाया" (बुझाया) गया तो अँधेरा हो जाता है।

ऊँचे उज्जल भाग सूँ, आय मिले गुरुदेव।
प्रेम दिया नन्हा किया, पूरन पायो भेव ॥१४॥
सहजो पूरन भाग सूँ, पाय लिये सुखदान।
नख सिख आई दीनता, भजे बड़ाई मान ॥१५॥
सहजो पूरन भाग सूँ, पाय लिये सुखदैन।
गये कुलच्छन देह सूँ, सुलच्छन पायो चैन ॥१६।
औगुन थे सो सब गये, राज करैं उनतीस[1]।
प्रेम झिला प्रीतम मिला, सहजो वारा सीस ॥१७॥

प्रेम का अङ्ग

चरनदास सतगुरु दियो, प्रेम पियाला छान।
सहजो मतवारे भये, तुरिया तत गलतान ॥ १ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, मन भयो चकनाचूर।
छके रहैं घूमत रहैं, सहजो देख हजूर ॥ २ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, प्रीतम के रँग माहिं।
सहजो सुधि बुधि सब गई, तन की सीधी नाहिं ॥ ३ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, पलटि गयो सब रूप।
सहजो दृष्टि न आवई, कहा रंक कहा भूप ॥ ४ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, कहैं बहकते बैन।
सहजो मुख हाँसो छुटै, कबहू टपकै नैन ॥ ५ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, जाति बरन गइ छूट।
सहजो जग बौरा कहै, लोग गये सब फूट ॥ ६ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, नेम धरम गयो खोय।
सहजो नर नारी हँसैं, वा मन आनँद होय ॥ ७ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, सहजो डिगमिग देह[2]।
पाँव पड़ै कितकै किती, हरि सम्हाल जब लेह ॥ ८ ॥

(१) मन और ३ गुण और २५ प्रकृतियाँ। (२) शरीर।

कबहूँ हकधक हो रहै, उठै प्रेम हित गाय।
सहजो आँख मुँदी रहै, कबहूँ सुधि हो जाय ॥ ९ ॥
मन में तो आनँद रहै, तन बौरा सब अंग।
ना काहू के संग है, सहजो ना कोइ संग ॥१०॥
प्रेम लटक दुर्लभ महा, पावै गुरु के ध्यान।
अजपा सुमिरन कहत हूँ, उपजे केवल ज्ञान ॥११॥

अजपा गायत्री का अंग

ऐसा सुमिरन कीजिये, सहज रहै लौ लाय।।
बिनु जिभ्या बिनु तालुवे, अन्तर सुरत लगाय ॥ १ ॥
हंसा सोहं तार कर, सुरति मकरिया पोय।
उतर उतर फिरि फिरि चढ़ै, सहजो सुमिरन होय ॥ २ ॥
बरत[1] बाँध कर धरन में, कला गगन में खाय।
अर्ध उर्ध नट ज्यौं फिरै, सहजो राम रिझाय ॥ ३ ॥
लगै सुन्न में टकटकी, आसन पदम लगाय।
नाभि नासिका माहिं करि, सहजो रहै समाय ॥ ४ ॥
सहज स्वाँस तीरथ बहै, सहजो जो कोइ न्हाय।
पाप पुन्न दोनों छुटैं, हरि पद पहुँचे जाय ॥ ५ ॥
हक्कारे[2] उठि नाम सूँ, सक्कारे होय लीन।
सहजो अजपा जाप यह, चरनदास कहि दीन ॥ ६ ॥
सब घट अजपा जाप है, हंसा सोहं पुर्ष।
सुरत हिये ठहराय के, सहजो या बिधि निर्ख ॥ ७ ॥
सब घट व्यापक राम है, देही नाना भेष।
राव रंक चंडाल घर, सहजो दीपक एक ॥ ८ ॥

सत्त बैराग जगत मिथ्या का अंग

॥ दोहा ॥

आतम में जागत नहीं, सुपने सोवत लोग।
सहजो सुपने होत हैं, रोग भोग और जोग ॥ १ ॥

(१) रस्सी। (२) पुकारै।

कोटि बरस इक छिन लगै, ज्ञान दृष्टि जो होय।
बिसरि जगत औरै बनै, सहजो सुपने सोय ॥ २ ॥
ऐसे ही सब स्वप्न है, स्वर्ग मिर्तु पाताल।
तीन लोक छल रूप है, सहजो इन्दरजाल ॥ ३ ॥
अज्ञानी जानत नहीं, लिप्त भया करि भोग।
ज्ञानी तौ दृष्टा भये, सहजो खुसी न सोग ॥ ४ ॥
मन माहीं बैराग है, ब्रह्म माहिं गलतान।
सहजो जगत अनित्य है, आतम कूँ नित जान ॥ ५ ॥
सहजो सुपने एक पल, बीतै बरस पचास।
आँख खुले जब झूठ है, ऐसे ही घर बास ॥ ६ ॥
मृग तृस्ना जल साँच है, जब लग निकट न जाय।
सहजो तब लग जग बन्यौ, सतगुरु दृष्टि न पाय ॥ ७ ॥
जैसे बालक जल बिषे, देखि देखि डरपाय।
समझ भई जब भर्म था, सहजो रहै खिसाय ॥ ८ ॥
ज्ञानी को जग झूठ है, अज्ञानी कूँ साँच।
कोटि लाल कागद लिखे, सहजो बैठा बाँच ॥ ९ ॥
जगत तरैयाँ भोर की, सहजो ठहरत नाहिं।
जैसे मोती ओस की, पानी अँजुली माहिं ॥१०॥
धूवाँ कौ सो गढ़ बन्यो, मन में राज सँजोय।
झाँईं माईं सहजिया, कबहूँ साँच न होय ॥११॥
ऐसे ही जग झूठ है, आतम कूँ नित जान।
सहजो काल न खा सकै, ऐसो रूप पिछान ॥१२॥

सच्चिदानंद का अंग

॥ दोहा ॥

नया पुराना होय ना, घुन नहिं लागै जासु।
सहजो मारा ना मरै, भय नहिं ब्यापै तासु। १ ॥

किरै[1] घटै छीजै नहीं, ताहि न भिजवै नीर।
ना काहू के आसरे, ना काहू के सीर ॥ २ ॥
रूप बरन वा के नहीं, सहजो रंग न देह।
मीत इष्ट वा के नहीं, जाति पाँति नहिं गेह ॥ ३ ॥
सहजो उपजै ना मरै, सद्बासी नहि होय।
रात दिवस ता में नहीं, सीत ऊस्न नहिं सोय ॥ ४ ॥
आग जलाय सकै नहीं, सस्तर सकै न काटि।
धूप सुखाय सकै नहीं, पवन सकै नहिं आटि[2] ॥ ५ ॥
मात पिता वा के नहीं, नहीं कुटुँब को साज।
सहजो वाहि न रंकता, ना काहू को राज ॥ ६ ॥
आदि अन्त ता के नहीं, मध्य नहीं तेहि माहिं।
वार पार नहिं सहजिया, लघू दीर्घ भी नाहिं ॥ ७ ॥
परलय में आवै नहीं, उत्पति होय न फेर।
ब्रह्म अनादी सहजिया, घने हिराने हेर ॥ ८ ॥
जाके किरिया करम ना, षट दर्सन को भेस।
गुन औगुन ना सहजिया, ऐसो पुरुष अलेस ॥ ९ ॥
रूप नाम गुन सूँ रहित, पाँच तत्त सूँ दूर।
चरनदास गुरु ने कही, सहजो छिपा हजूर ॥१०॥
आपा खोजे पाइये, और जतन नहिं कोय।
नीर छीर निर्ताय के, सहजो सुरति समोय ॥११॥

नित्य अनित्य सांख्य मत का अंग

भिन्न भिन्न दोनों करै, वही सांख्य मति भेद।
जीवन और बिदेह सूँ, मुक्ति पाय तजि खेद ॥ १ ॥
जाग्रत और सुषोपती, स्वप्न अवस्था तीन।
काया ही सूँ होत है, घटै बढ़ै ह्वै छीन ॥ २ ॥

(१) कीड़ा लगै। (२) उड़ाना, हटाना।

तुरिया इकरस आतमा, इन तें परे निहार।
इन्द्री मन गहि ना सकै, सहजो तत्त अपार ॥ ३ ॥
जिभ्या चाखि सकै नहीं, स्रवन सुनै नहि ताहि।
नैन बिलोकि सकै नहीं, नासा तुचा न पाय ॥ ४ ॥
अनुभव ही सूँ जानिये, चित बुधि थकि थकि जाहिं।
तीन भाँति हंकार की, सो भी पावै नाहिं ॥ ५ ॥
जाके रस नहि रूप नहिं, गन्ध नहीं वा ठौर।
सब्द नहीं अस्पर्स नहिं, सहजो वह कछु और ॥ ६ ॥
गुन तीनों सूँ है परे, ता में रूप न रेख।
बोध रूप हो सहजिया, ब्रह्म दृष्टि करि देख ॥ ७ ॥

निर्गुन सर्गुन संशय निवारन भक्ति का अंग

॥ दोहा ॥

निराकार आकार सब, निर्गुन और गुनवन्त।
है नाहीं सूँ रहित है, सहजो यों भगवन्त ॥ १ ॥
नाम नहीं औ नाम सब, रूप नहीं सब रूप।
सहजो सब कछु ब्रह्म है, हरि परगट हरि गूप ॥ २ ॥
कहा कहूँ कहा कहि सकूँ, अचरज अलख अभेव।
सुने अचंभो सों लगै, सहजो ब्रह्म अलेव[1] ॥ ३ ॥
वही आप परगट भयो, ईसुर लीला धार।
माहिं अजुध्या और बृज, कौतुक किये अपार ॥ ४ ॥
चार बीस अवतार धरि, जन की करी सहाय।
राम कृश्न पूरन भये, महिमा कही न जाय ॥ ५ ॥
भक्त हेत हरि आइया, पिरथी भार उतारि।
साधन की रच्छा करी, पापी डारे मारि ॥ ६ ॥
निर्गुन सूँ सर्गुन भये, भक्त उधारनहार।
सहजो की दंडौत है, ता कूँ बारम्बार ॥ ७ ॥

---

(१) पवित्र।

ता के रूप अनन्त हैं, जा के नाम अनेक।
ता के कौतुक बहुत हैं, सहजो नाना भेष ॥ ८ ॥
गीता में श्रीकृश्न ने, बचन कहे सब खोल।
सब जीवन में मैं बसूँ, कै चर कहा अडोल ॥ ९ ॥
मैं अखंड ब्यापक सकल, सहज रहा भर पूर।
ज्ञानी पावै निकट हीं, मूरख जानै दूर ॥१०॥
जोगी पावै जोग सूँ, ज्ञानी लहै बिचार।
सहजो पावै भक्ति सूँ, जा के प्रेम अधार ॥११॥
धन्य जसोदा नन्द धन, धन बृजमंडल देस।
आदि निरंजन सहजिया, भयो ग्वाल के भेष ॥१२॥

॥ चौपाई ॥

नेत नेत कहि बेद पुकारैं। सो अधरन पर मुरली धारैं ॥
जाकूँ ब्रह्मादिक मुनि ध्यावैं। ताहि पूत कहि नन्द बुलावैं ॥
सिव सनकादिक अन्त न पावैं। सो सखियन सँग रास रचावैं ॥
संजम साधन ध्यान न आवैं। सो ग्वालन सँग खेल मचावैं ॥
अनन्त लोक मेटै उपजावै। सो मोहन बृजराज कहावै ॥
निर्बिकार निर्भय निर्बाना। कारन भक्त धरे तन नाना ॥
निर्गुन सर्गुन भेद न दोई। आदि अन्त मध एकहि होई ॥
गूँगे को सुपनो यह बाता। सहजो कहै कौन के साथा ॥१३॥

॥ दोहा ॥

निर्गुन सर्गुन एक प्रभु, देख्यो समझ बिचार।
सतगुरु ने आँखी दई, निस्चै कियो निहार ॥१४॥
सहजो हरि बहु रङ्ग है, वही प्रगट वहि गूप।
जल पाले में भेद ना, ज्यों सूरज अरु धूप ॥१५॥
चरनदास गुरु की दया, गयो सकल सन्देह।
छूटे बाद बिबाद सब, भई सहज गति लेह ॥१६॥

गुरु बिन मारग ना चलै, गुरु बिन लहै न ज्ञान।
गुरु बिन सहजो धुन्ध है, गुरु बिन पूरी हान ॥१७॥
सतगुरु बिन भटकत फिरै, परसत पाथर नीर।
सहजो कैसे मिटत है, जम जालिम की पीर ॥१८॥
पूजै नौग्रह देवता, पित्तर सतो अकूत[1]।
सहजो केसे सुलझिहै, ह्वै रहो सूत कसूत ॥१९॥
गुरु कूँ जानत है नहीं, बनिता सुत के मोह।
साधन की निन्दा करै, हरि सूँ राखे द्रोह ॥२०॥
अनन्य भक्ति उपजे नहीं, गुरु सूँ नाहीं सीर[2]।
सहजो मिलै न सिन्ध कूँ, ज्यों तलाब को नीर ॥२१॥
जनक बिदेही परम गुरु, दादा गुरु सुकदेव।
सहजो की डण्डौत है, चरनदास गुरु भेव ॥२२॥

॥ अड़ियल ॥

हरिप्रसाद की सुता, नाम है सहजो बाई।
दूसर कुल में जन्म, सदा गुरु चरन सहाई ॥२३॥
चरनदास गुरुदेव, भेव मोहिं अगम बतायौ।
जोग जुगत सूँ दुलभ, सुलभ करि दृष्टि दिखायौ ॥२४॥

॥ दोहा ॥

और साधन परनाम करि, कर जोड़ूँ सिर नाय।
यही दान मोहि दीजिये, भक्ति करूँ चित लाय ॥२५॥

॥ दोहा ॥

फाग महीना अष्टमी, सुकल पाख बुधवार।
संवत अठारे सैं हुते, सहजो किया बिचार ॥
गुर अस्तुति के करन कूँ, बाढ़्यो अधिक हुलास ॥
होते होते हो गई, पोथी सहज प्रकास ॥

---

(१) अनंत। (२) निज की खेती।

दिल्ली सहर सुहावना, परीछितपुर में बास।
तहाँ समापत ही भई, नवका सहज प्रकास॥
सहज प्रकास पोथी कही, चरनदास परताप।
पढ़ै सुनै जो प्रीत सूँ, भाजै सबही पाप॥

सोलह तिथि निर्नय

परनाम करूँ सुकदेव जी, तुम पर वारूँ प्रान।
सोलह तिथि अब कहत हूँ, इनका दीजै ज्ञान॥
चरनदास के चरन कूँ, निस दिन राखूँ ध्यान।
ज्ञान भक्ति और जोग कूँ, तिथि में करूँ बखान॥

॥ कुण्डलियाँ ॥

मावस

ममा ररा दो अंक कूँ राखौ हिरदे माहिं।
धर्मराय जाँचै नहीं लेखा माँगै नाहिं॥
लेखा माँगै नाहिं जाय नहिं जमपुर बंधा।
ऐसे निर्मल नाम को बिसरै सो अंधा॥
टीका चारो बेद का महिमा कही न जाय।
औसर बीत्यो जात है सहजो सुमिर अघाय॥

॥ पड़िवा ॥

पानी का सा बुलबुला यह तन ऐसा होय।
पीव मिलन की ठानिये रहिये ना पड़ि सोय॥
रहिये ना पड़ि सोय बहुर नहिं मनुखा देही।
आपन ही कूँ खोज मिलै जब राम सनेही॥
हरि कूँ भूले जो फिरैं सहजो जीवन छार।
सुखिया जब ही होयगो सुमिरैगो करतार॥

॥ दूज ॥

दोयज धंधा जगत का लागि रहै दिन रैन।
कुटुँब महा दुख देत है कैसे पावै चैन॥

कैसे पावै चैन बिना साधू की संगत।
दुनिया रंग पतंग मजीठी गुरु की रंगत॥
जन्म मरन ता सूँ छुटै सहजो दरसै राम।
चौरासी के दुख मिटैं पावै निज पुर धाम॥

॥ तीज ॥

तीज तनिक सुख कारने बहुत फसायो जीव।
लालच लगि ऐसो गिरै जैसे मक्खी घीव॥
जैसे मक्खी घीव डूब करि निकसै नाहीं।
ऐसे गृह नर बूड़ि रहै कुनबे के माहीं॥
मनुखा देही पाय कै सहजो डारी खोय।
जमपुर बाँधे वे चले चौरासी दुख होय॥

॥ चौथ ॥

चौथ चहूँ दिस तिमिर है महा घोर भयमान।
मूरख जन सोवत तहाँ मिथ्या ते अज्ञान॥
मिथ्या ते अज्ञान सत्य कूँ जानत नाहीं।
बन बन ढूँढ़त फिरत राम अपने ही माहीं॥
ज्यों मिंहदी में रंग है लकड़ी मध्य हु तास।
सहजो काया खोजि ले काहे रहत उदास॥

॥ पाँचै ॥

पाँचौ इन्द्री बस करो मन जीतन की ठान।
पवन रोक अनहद लगो पावो पद निर्बान॥
पावो पद निर्बान करो तुम ऐसो करनी।
आसन संजम साध बन्ध लागे जब धरनी॥
चित मन बुधि हंकार कूँ करो इकट्ठे आन।
सहजो निज मन होय जब निस्चल लागै ध्यान॥

॥ छट्ट ॥

छहूँ कँवल कूँ देख करि सतवें में घर छाव।
रसना उलटि लगाव करि जब आगे कूँ धाव॥

जब आगे कूँ धाव देख करि जगमग जोती।
बिन दामिनि चमकार सीप बिन उपजै मोती॥
हंस हंस जहँ होत है ओअं ओअं[1] होय।
चरनदास यों कहत हैं सहजो सुरति समोय॥

॥ सातैं॥

सतसंगति ही कीजिये सत ही कथिये ज्ञान।
सत ही मुख सूँ बोलिये सत ही कीजै ध्यान॥
सत ही कीजै ध्यान हद्द तजि बेहद लागो।
तीन अवस्था छोड़ि जाय तुरिया सूँ पागो॥
निराकार निर्गुन तहाँ इकरस चेतन रूप।
रात दिना सहजो नहीं नहीं छाँह नहि धूप॥

॥ आठैं॥

आठन कूँ जानै नहीं दस कूँ नाहीं भेद।
चौबीसो समझै नहीं कैसे छूटै खेद॥
कैसे छूटै खेद पंच कूँ जीतै नाहीं।
और पचीसौं संग रहै उनके[2] ही माहीं॥
दोय सदा लागो रहै चौरासी के फेर।
चरनदास यों कहत हैं सहजो आपा हेर॥

॥ नौमी॥

निन्दा हिंसा त्याग करि तामस कूँ दे पीठ।
चित कूँ अस्थिर कीजिये नासा आगे दीठ॥
नासा आगे दीठ जहाँ कछु देखो भाई।
पाँच तत्त दरसायँ और अचरज दरसाई॥
तिरदेवा और आठ सिधि देखो इन्दुर[3] भूप।
चरनदास कहैं सहजिया साधन अधिक अनूप॥

---

(१) ओंओं जहँ। (२) उनहीं के। (३) चाँद।

॥ दसमी ॥

दसो दिसा भर पूर है ता में ये सब पिंड ।
ज्यों सरवर में बुदबुदे ब्रह्म बीच ब्रह्मंड ॥
ब्रह्म बीच ब्रह्मंड तासु को वार न पारा ।
ऐसो तत्त्व अगाध नेत कहि निगम पुकारा ॥
चरनदास कहैं सहजिया गुरु से लेवौ ज्ञान ।
नैना होहिं अनन्त ही जब यह पावे जान ॥

॥ एकादसी ॥

ग्यारह गति जो चहत हो तजौ जगत की आस ।
कलह कल्पना छाँड़ि के आतम में करि बास ॥
आतम में करि बास खैंच इन्द्री दस लावौ ।
मन इस्थिर जब होय सुरति और निरति मिलावौ ॥
ध्याता थाके ध्यान में ध्यान ध्येय के माहिं ।
जनम मरन मिटि सहजिया उपजै बिनसै नाहिं ॥

॥ द्वादसी ॥

द्वादस दावा दूर करि दावे ही में दुक्ख ।
राग दोष और आपदा अकस निबारे सुक्ख ॥
अकस निबारे सुक्ख मोहिं चरनदास दुहाई ।
तामस सब हो त्याग तासु में बहुत भलाई ॥
काम क्रोध मद लोभ कूँ ज्ञान अगिन सूँ जार ।
जब निर्मल ह्वै सहजिया आनँद लहै अपार ॥

॥ तेरस ॥

तेरस तन अचरज महा छिनभंगी छल रूप ।
देखत ही देखत गये कहा रंक कहा भूप ॥
कहा रंक कहा भूप कोई रहने नहिं पावे ।
इत सूँ सबही जाहि बहुरि उत सूँ नहिं आवे ॥
इतने ऊपर घर करै महल दरब सन्तान ।
हाँसो आवे सहजिया ये मूरख मस्तान ॥

॥ चौदस ॥

चौरासी भुगती घनी बहुत सही जम मार।
भरम फिरे तिहुँ लोक में तहू न मानी हार॥
तहू न मानी हार मुक्ति की चाह न कीन्ही।
हीरा देही पाय मोल माटी के दीन्ही॥
मूरख नर समझै नहीं समझाया बहु बार।
चरनदास कहैं सहजिया सुमिरै ना करतार॥

॥ पूनो ॥

पूनो पूरा गुरु मिलै मेटै सब सन्देह।
सोवत सूँ चेतन्न होय देखै जाग्रत गेह॥
देखै जाग्रत गेह जहाँ सूँ सुपने आयौ।
जग कूँ जान्यौ साँच रूप अपनो बिसरायौ॥
चरनदास कहैं सहजिया गुरु चरनन चित लाव।
तिमिर मिटै अज्ञान कूँ ज्ञान चाँदनो पाव॥

॥ दोहा ॥

सोलह तिथि पूरन भई, सहजो करी बखान।
चरनदास की दया सूँ, मिटो सकल अज्ञान॥
लिखै पढ़ै सुनै प्रीत सूँ, ता को पाप नसाहि।
और ऐसी करनी करै, मुक्ति रूप ह्वै जाहि॥

॥ सात वार निर्नय ॥

॥ दोहा ॥

नमो नमो सुकदेव जी, तुम्हरी सरन गही।
मेरे सिर पर हाथ धरि, चरनों लागि रही॥
सात वार बरनन करूँ, कुँडली माहिं उचार।
याही सुख सूँ कहत हूँ, तुम कूँ हिरदे धारि॥

॥ कुण्डलिया ॥

(१)

मंगल मालो राम है, जाका यह जग बाग।
निस दिन ताही में रहै, वा ही सेती लाग॥

वा ही सेती लाग, करी जिन यह गुलजारी ।
पात पात की खबर, डाल सब लागे प्यारी ॥
आपन ही कूँ जानि लै, वाही ठौर का फूल ।
चरनदास कहै सहजिया, ऐसे समझो कूल ॥

(२)

बुध बारी में फल घने, जो पै देवै बाड़ ।
रखवारी के बिन किये, पाँचौ करैं उजाड़ ॥
पाँचौ करैं उजाड़, पचीसौ चरि चरि जाई ।
सावधान जो होय, सोई वा के फल खाई ॥
चरनदास कहै सहजिया, ऐसे समुझ बिचार ।
तेरी काया में खिले, भाँति भाँति गुलजार ॥

(३)

बृहस्पति वारी आइया, पाई मनुषा देह ।
सो तन छिन छिन घटत है, भयौ जात है खेह ॥
भयौ जात है खेह, बहुरि लाहा कब लैहौ ।
बेगहिं समुझ सँभार, नहीं बहुतै पछितैहौ ॥
आगा पीछा क्या करै, सकल बासना त्याग ।
चरनदास कहै सहजिया, हरि सुमिरन कूँ लाग ॥

(४)

सुक्कर सर[1] उपदेस का, लगा कलेजे नाहिं ।
ते नर पसू समान हैं, या दुनियाँ के माहिं ॥
या दुनियाँ के माहिं, सदा चक्कर में डोलैं ।
आवा गौन दुख महा, तासु की गाँठि न खोलैं ॥
ऐसे मूरख बावरे, भोंदू मुग्ध[2] गँवार ॥
चरनदास कहै सहजिया, भरमैं बारम्बार ॥

(१) बान, तीर । (२) मूर्ख ।

29

(५)

थावर[1] थिर करतार है, और सकल मिटि जाय ।
जा तें सूमति प्रीति करि, रहते चित्त लगाय ॥
रहते चित्त लगाय, तासु ने जग उपजाया ।
वा की सरनै आय, करै बहु बिधि की छाया ॥
ऐसा हरि का नाम है, जनम मरन मिटि जाय ।
चरनदास कहै सहजिया, साचे सूँ लौ लाय ॥

(६)

एत[2] जो आये जगत में, हरि सुमिरन के काज ।
ह्याँ कुछ कोया और ही, नेक न आई लाज ॥
नेक न आई लाज, साज सब खोटे कीन्हे ।
सदा रहे अज्ञान, राम घट में नहिं चीन्हे ॥
जैहौ जनम गँवाय के, पछितावा रहि जाय ।
चरनदास कहै सहजिया, कहा कियौ तन पाय ॥

(७)

सोम सिरीपति[3] सेइये, गुरु की आयस[4] लेय ।
सतसंगति अचरज कथा, ताही में मन देय ॥
ताही में मन देय, और ऊँचा नहिं या तें ।
और सकल धर्म उरै[5], सभी थोथो हैं बातैं ॥
चरनदास कहै सहजिया, भक्ति सिरोमनि जान ।
तन धन चित बुध प्रान कूँ, ता में दीजै आन ॥

॥ दोहा ॥

सात वार ये मैं कहे, जा में हरि का भेद ।
जो कोइ समुझै प्रीति सूँ, छूटै सबही खेद ॥
सातो वारों बीच में, जग उपजै मिटि जाय ।
सहजो बाई हरि जपौ, आवागवन नसाय ॥

(१) अडोल । (२) इत, यहाँ । (३) श्रीपति=विष्णु । (४) आज्ञा । (५) वरे, पीछे ।

मिश्रित पद

॥ राग गौरी ॥

नमो नमो गुरु तुम सरना ।
तुम्हरे ध्यान भरम भय भागैं, जीते पाँचौ मरना[1] ॥१॥
दुख दारिद्र मिटैं तुम नाऊँ, कर्म कटैं जो होहिं घना ।
लोक परलोक सकल बिधि सुधरैं, पग लागैं आय ज्ञान गुना ॥२॥
चरन छुए सब गति मति पलटैं, पारस जैसे लोह सुना[2] ।
सीप परसि स्वाँती भयो मोती, सोहत है सिर राज रना ॥३॥
ब्रह्म होय जीव बुधि नासै, जब कैसो होना मरना ।
अमर होय अमरापद पावै, यह गुर कहियै गुरु बचना ॥४॥
चरनदास गुरु पूरे पाये, जग का दुख सुख क्यों सहना ।
सहजो बाई ब्याध छुटा कर, आनँद मंगल में रहना ॥५॥

॥ राग सोरठा ॥

(१)

हमारे गुरु बचनन की टेक ।
आन धरम कूँ नाहिं जानूँ, जपूँ हरि हरि एक ॥ १ ॥
गुरु बिना नहिं पार उतरौ, करौ नाना भेख ।
रमौ तीरत बर्त राखौ, होहु पंडित सेख ॥ २ ॥
गुरु बिना नहिं ज्ञान दीपक, जाय ना अँधियार ।
काम क्रोध मद लोभ माहीं, उरझिया संसार ॥ ३ ॥
चरनदास गुरु दया करि कै, दिये मन्तर कान ।
सहजो घट परगास हूवा, गयौ सब अज्ञान ॥ ४ ॥

(२)

भया हरि रस पी मतवारा ।
आठ पहर झूमत ही बीतै, डार दिया सब भारा ॥ १ ॥

---

(१) सोना ।

इड़ा पिंगला ऊपर पहुँचे, सुखमन पाट उघारा।
पीवन लगे सुधारस जब ही, दुर्जन पड़ी बिडारा ॥ २ ॥
गंग जमन बिच आसन मार्यौ, चमक चमक चमकारा।
भँवर गुफा में दृढ़ ह्वै बैठे, देख्यो अधिक उजारा ॥ ३ ॥
चित इस्थिर चंचल मन थाका, पाँचो का बल हारा।
चरनदास किरपा सूँ सहजो, भरम करम हुए छारा ॥ ४ ॥

॥ राग मलार ॥

(१)

हमारे गुरु पूरन दातार।
अभय दान दीनन को दीन्हे, कीन्हें भवजल पार ॥ १ ॥
जन्म जन्म के बन्धन काटे, जम की बंध निवार।
रंक हुते सो राजा कीन्हे, हरि धन दियौ अपार ॥ २ ॥
देवैं ज्ञान भक्ति पुनि देवैं, जोग बतावनहार।
तन मन वचन सकल सुखदाई, हिरदे बुधि उँजियार ॥ ३ ॥
सब दुख-गंजन पातक-भंजन, रंजन ध्यान बिचार।
साजन दुर्जन जो चलि आवै, एकहि दृष्टि निहार ॥ ४ ॥
आनँद रूप सरूप मई है, लिप्त नहीं संसार।
चरनदास गुरु सहजो के रे, नमो नमो बारम्बार ॥ ५ ॥

(२)

अस जन धन जननी जिन जाये।
दूसर कुल में भक्ति नहीं थी, जा कूँ तारन आये ॥ १ ॥
कारन परमारथ तन धार्यौ, बहुतक जीव उबारे।
खेवट ह्वै भवसागर माहीं, सरन लगे सो तारे ॥ २ ॥
मुक्ति सरूप भूप मन जोते, आसा सकल जराये।
भक्ति खेत में लोभ खरतवा[१], ता कूँ रहन न पाये[२] ॥ ३ ॥

(१) मोथा घास जिसकी जड़ बड़ी लम्बी होती है। (२) लाये।

ज्ञान जोग को सूरज प्रगट्यौ, बानी किरन पसारी ।
चार दिसा में भयौ उजारो, चौंक उठे नर नारी ॥ ४ ॥
प्रेम झलाझल नैनन माहीं, हिरदे सीतलताई ।
नख सिख सील सँतोष छिमा हीं, बरनै सहजो बाई ॥ ५ ॥

(३)

सखीरी आज धन धरती धन देसा ।
धन डहरा मेवात मँझारे, हरि आये जन भेसा ॥ १ ॥
धन भादों धन तीज सुदी है, धन दिन मंगलकारी ।
धन ढूसर कुल बालक जनम्यौं, फुल्लित भये नर नारी ॥ २ ॥
धन धन माई कुञ्जो रानी, धन मुरलीधर ताता ।
अगले दत्तव[1] अब फल पाये, तिन के सुत भयौ ज्ञाता ॥ ३ ॥
भरम नसावन भक्ति बढ़ावन, बहु पारायन[2] करता ।
सब फल दायक सब कुछ लायक, अघमोचन दुख हरता ॥ ४ ॥
अनगिन बरस बहुत चिरजीवौ, गुरु सुकदेव सहाई ।
सहजो बाई देत असीसैं, पावै दरस बधाई ॥ ५ ॥

(४)

सखोरी आज जन्मे लीला धारो ।
तिमिर भजैगो भक्ति खिड़ैगी[3], पारायन नर नारी ॥ १ ॥
दर्सन करतै आनँद उपजै, नाम लिये अघ नासै ।
चर्चा में सन्देह न रहसी, खुलिहै प्रबल प्रगासै ॥ २ ॥
बहुतक जीव ठिकानो पैहैं, आवागवन न होई ।
जम के दंड दहन पावक को, तिन कूँ मूल निकोई[4] ॥ ३ ॥
होइ है जोगी प्रेमी ज्ञानी, ब्रह्म रूप है जाई ।
चरनदास परमारथ कारन, गावै सहजो बाई ॥ ४ ॥

(५)

सखीरी आज जन्म लियौ सुखदाई ।
ढूसर कुल में प्रगट हुए हैं, बाजत अनँद बधाई ॥ १ ॥

(१) शुभ करनी । (२) परिपूर्ण । (३) खिलैगी । (४) उखाड़ दिया ।

भादों तीज सुदी दिन मंगल, सात घड़ी दिन आये।
सम्वत सत्रहसाठ[1] हुते तब, सुभ समयो सब पाये ॥ २ ॥
जैजैकार भयौ भधि गाऊँ, मात पिता मुख देखौ।
जानत नाहिंन कौन पुरुष हैं, आये हैं नर भेखौ ॥ ३ ॥
संग चलावन अगम पन्थ कूँ, सूरज भक्ति उदय को।
आप गुपाल साध तन धारयो, निहचै मो मन ऐसो ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव नाँव धरि दीन्ह्यौ, चरनदास उपकारी।
सहजो बाई तन मन वारै, नमो नमो बलिहारी ॥ ५ ॥

(६)

सखीरी आज आनँद देव बधाई।
सतगुरु ने औतार लियो है, मिलि मिलि मंगल गाई ॥ १ ॥
अद्भुत लीला कहा बखानौं, मो पै कही न जाई।
बहु बिधि बाजे बाजन लागे, सुनत हिया हुलसाई ॥ २ ॥
धन भादों धन तीज सुदी है, जा दिन प्रगटे आई।
धन धन कुञ्जो भाग तिहारे, चरनदास सुत पाई ॥ ३ ॥
कलिजुग में हरि भक्ति चलाई, जन की करैं सहाई।
श्री सुकदेव करी जब किरपा, गावै सहजो बाई ॥ ४ ॥

(१) ॥ राग बिलावल ॥

मुकट लटक अटकी मन माहीं।
नृत तन नटवर मदन मनोहर, कुण्डल झलक अलक[2] बिथुराई ॥१॥
नाक बुलाक हलत मुक्ताहल, होठ मटक गति भौंह चलाई।
ठुमक ठुमक पग धरत धरनि पर, बाँह उठाय करत चतुराई ॥२॥
झुनक झुनक नूपुर झनकारत, तताथेई थेई रीझ रिझाई।
चरनदास सहजो हिये अन्तर, भवन करौ जित रहो सदाई ॥३॥

(२)

हरि बिनु तेरो ना हितू, कोइ या जग माहीं।
अन्त समय तू देखि ले, कोइ गहे न बाँहीं ॥ १ ॥

---

(१) सत्रह सौ साठ। (२) घुँघराली लटैं।

जम सूँ कहा छुटा सकै, कोइ संग न होई।
नारी हू फटि रहि गई, स्वारथ कूँ रोई॥ २॥
पुत्र कलित्तर कौन के, भाई अरु बन्धा।
सब ही ठोक जलाइ हैं, समझै नहिं अन्धा॥ ३॥
महल दरब ह्याँ हो रहै, पचि पचि करि जोड़ा।
करहा गज ठाढ़े रहैं, चाकर और घोड़ा॥ ४॥
पर काजै बहु दुख सहे, हरि सुमिरन खोया।
सहजो बाई जम घिरैं[1], सिर धुनि धुनि रोया॥ ५॥

॥ राग काफी ॥

नैनों लख लेनी साईं तैंड़े हजूर।
आगे पीछे दहिने बायें, सकल रहा भरपूर॥ १॥
जिन को ज्ञान गुरू को नाहीं, सो जानत हैं दूर।
जोग जज्ञ तीरथ ब्रत साधै, पावत नाहीं कूर॥ २॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल जिमीं में, सोई हरि का नूर।
चरनदास गुरु मोहिं बतायौ, सहजो सब का मूर॥ ३॥

॥ राग असावरी ॥

बाबा काया नगर बसावौ।
ज्ञान दृष्टि सूँ घट में देखौ, सुरति निरति लौ लावौ॥ १॥
पाँच मारि मन बसि कर अपने, तीनौं ताप नसावौ।
सत सन्तोष गहौ दृढ़ सेती, दुर्जन मारि भजावौ॥ २॥
सील छिमा धीरज कूँ धारौ, अनहद बंब बजावौ।
पाप बानिया रहन न दीजै, धरम बजार लगावौ॥ ३॥
सुबस बास होवै जब नगरी, बैरी रहै न कोई।
चरनदास गुरु अमल बतायौ, सहजो सँभलौ सोई॥ ४॥

॥ राग बसंत ॥

आयो बसंत धन मेरे भाग। पाँचो गावैं एक राग॥ १॥

---

(१) जब जम ने घेर लिया।

और पचीसौं उनके संग। सो भी भींगे सरस रंग ॥२॥
मतवारे भये मन से भूप। सखि बिसरीं सब अपना रूप॥३॥
नगर लोग नहि तन सँभार। मगन भये सब वार वार ॥४॥
कह्यो न जाय उपज्यो अनन्द। और खेल सब भये मन्द ॥५॥
तिरबेनी तट करि बिहार। पीवत बैठे अमी धार ॥६॥
जोति बाल पूजे सुदेव। अगम अगोचर पायौ भेव ॥७॥
सीस भेंट जो दीन्हो जाय। दरसन कीन्हे अति अघाय ॥८॥
चरनदास गुरु दई सैन। सहजो बाई पायो चैन ॥९॥

॥ राग होरी धनासरी ॥

(१)

साधो मन माया के संग, सब जग रंग रह्यो ॥टेक॥
मूरख पचे खेल के अंधरे, नाना स्वाँग बनाय।
ओसा धरि धरि नाचन लागे, चोवा चाह लगाय ॥ १ ॥
जोग करें सिधि आठौं चाहै, मान बड़ाई हेत।
राज बासना भोग लोक के, कासी करवत लेत ॥ २ ॥
पंच अगिन बहु तापन लागे, बहुत अर्धमुख झूल।
बहुतक दौड़ें अठसठ तीरथ, ज्ञान गली गये भूल ॥ ३ ॥
चरनदास गुरु तत्त लखायौ, दीन्हे खेल छुटाय।
सहजो बाई सीस निवावत, बार बार बलि जाय ॥ ४ ॥

(२)

मैं तो खेलूँ प्रभु के संग, होरी रंग भरी।
जित देखूँ तित रमि रह्यौ रे, सब में ब्यापक है हरी ॥१॥
सब कुछ भयो दियौ सुख जन कूँ, अद्भुत लीला है करी।
नाना जतन किये मिलवे कूँ, प्रीतम पायौ हम घरा[1] ॥२॥
पावत ही सब भ्रम भय भागे, आवागवन छुटी लरी[2]।
जीवन मुक्त भयौ मन मेरौ, ब्याधा सब आसा जरी ॥३॥

(१) घर ही में। (२) डोरी।

अमर लोक पद फगुवा पैये, जनम मरन बिपता दली[1] ।
चरनदास गुरु किरपा कीन्ही, सहजो हिये आनँद रली ॥४॥

॥ राग काफी ॥

हरि हर जप लेनी औसर बीतो जाय ।
जो दिन गये सो फिर नहिं आवैं, कर बिचार मन लाय ॥
या जग बाजी साच न जानो, ता में मत भरमाय ।
कोइ किसी का है नहिं बौरे, नाहक लियौ लगाय ॥
अंत समय कोइ काम न आवै, जब जम देहि बोलाय ।
चरनदास कहैं सहजो बाई. सत संगत सरनाय ॥

॥ राग बसंत ॥

आतम पूजा अधिक जान । सकल सिरोमन याहि मान ॥
बिस्तारो हित भवन[2] माहिं । भरम दृष्टि जहँ आवै नाहिं ।
हिरदा कोमल ठौर लिया । कर बिचार जहँ धूप दिया ॥
या सेवा का दया मूल । समता चंदन छिमा फूल ।
मीठे बचन सोइ बालभोग । निंदा झूठ तजो अजोग ॥
घंटा अनहद सुरत लाव । घट घट देखै एक भाव ॥
करौ सुखी सुख आप लेव । इस पूजा सों सुखी देव ॥
चरनदास गुरु दई मोहिं । हंस हंस जहँ जाप होहि ॥
इन्द्री मन बुध तहँ लगाव । कर सहजो बाई याको चाव ॥

(२)

सो बसंत नहिं बार बार । तैं पाई मानुष देह सार ॥
यह औसर बिरथा न खोव । भक्ति बीज हिये धरती बोव ॥
सतसंगत को सींच नीर । सतगुरु जी सों करौ सीर ॥
नीकी बार बिचार देव । परन राख या कूँ जु सेव ॥
रखवारी कर हेत हेत । जब तेरी होवै जैत जैत ॥

---

(१) टरी । (२) अंतर, घट ।

खोट कपट पंछी उड़ाव। मोह प्यास सबही जलाव ॥
सँभले बाड़ी नऊ अंग। प्रेम फूल फूलै रँग रंग ॥
पुहुप गूँध माला बनाव। आदि पुरुष कूँ जा चढ़ाव ॥
तौ सहजो बाई चरनदास। तेरे मन की पुरवैं सकल आस ॥

(३)

मिलि गावो रे साधो यह बसंत। जाकी अविगत लीला अगम पंथ॥
जहँ नाँव पदारथ है इकङ्ग। नहिं पैये दूजा और अंग ॥
जहँ दरसै साधो एक एक। नहिं पैये दूजा कोई भेष ॥
जहँ ज्ञान ध्यान को लगो तार। जहँ आप बिराजै ओंकार ॥
देखो सब घट ब्यापक निराकार। कोई न पावै वह बिचार ॥
जहँ ब्रह्म अखंडित अति अनूप। जाको सुरमुनि जोगी ध्यावैभूप ॥
जहँ छाय रहो है सर्ब माहिं। कोइ नहिं संतो खाली ठाहिं ॥
गुरु चरनदास पूरन औतार। जिन दान दियो जग ब्याध टार॥
सहजो बाई नावै सीस। मेरे भ्रम मेटे बिस्वाबीस ॥

॥ राग होरी ॥

साधो भौसागर के माहिं, काल होरी खेलाई ॥टेक॥
भाँति भाँति के रंग लिये हैं, करत जीवन की घात।
बूढ़ा बाला कछू न देखै, देखै ना दिन रात ॥ १ ॥
निहचै मौत लिये सँग रानी, नाना रंग सम्हार।
बड़े बड़े अभिमानी नामी, सो भी लीन्हे मार ॥ २ ॥
सूरज चंद वा भय तें काँपैं, स्वर्ग माहिं सब देव।
तन-धारी सबही थर्रावैं, ज्ञानी जानत भेव ॥ ३ ॥
आपन कूँ देही नहिं जानै, जानत आतम साँच।
चरनदास कह सहजो बाई, ताहि न आवै आँच ॥ ४ ॥

॥ राग होरी ॥

सुमिर सुमिर नर उतरो पार, भौसागर की तीछन धार ॥टेक॥

धर्म जिहाज माहिं चढ़ि लीजे, सँभल सँभल ता में पग दीजै ।
स्रम करि मन को संगी कोजै, हरि मारग को लागो यार ॥१॥
बादवान पुनि ताहि चलावै, पाप भरे तो हलन न पावै ।
काम क्रोध लूटन को आवै, सावधान ह्वै करो सँभार ॥२॥
मान पहाड़ी तहाँ अड़त है, आसा तृस्ना भँवर पड़त है ।
पाँच मच्छ जहँ चोट करत हैं, ज्ञान आँखि बल चलौ निहार ॥३॥
ध्यान धनी का हिरदे धारे, गुरु किरपा सूँ लगे किनारे ।
जब तेरी बोहित उतरे पारे, जन्म मरन दुख बिपता टारे ॥४॥
चौथे पद में आनंद पावे, या जग में तू बहुरि न आवै ।
चरनदास गुरुदेव चितावैं, सहजो बाई यही बिचार ॥५॥

॥ राग ललित ॥

जाग जाग जो सुमिरन करै । आप तरै औरन ले तरै ॥टेक॥
हरि की भक्ति माहिं चित देवै । पद पंकज बिन और न सेवै ।
आन धरम कूँ संग न लेवै । फलन कामना सब परिहरै ॥१॥
काल ज्वाल सबही छुट जावै । आवा गवन की डोरि नसावै ।
जोनी संकट फिरि नहिं आवै । बार बार जनमै नहिं मरै ॥२॥
ऊँची पदवो जग में पावै । राजा राना सीस नवावै ।
तन छूटे जा मुक्ति समावै । जो पै ध्यान धनी का धरै ॥३॥
ह्याँ पै सुख जो जाने कूरा । गुर चरनन में लागे पूरा ।
बेग सम्हारे जो जन सूरा । चरनदास सहजो हो अर ॥४॥

॥ राग बिलावल ॥

तुम गुनवंत मैं औगुन भारी ।
तुम्हरी ओट खोट बहु कीन्हे, पतित उधारन लाल बिहारी ॥१॥
खान पान बोलत अरु डोलत, पाप करत है देह हमारी ।
कर्म बिचारो तौ नहिं छूटौं, जो छूटौं तो दया तुम्हारी ॥२॥
मैं अधीन माया बस ह्वै करि, तुव सुधीन माया सूँ न्यारे ।
मैं अनाथ तुम नाथ गुसाईं, सब जीवन के प्रान पियारे ॥३॥

भौसागर में डर लागत मोहिं, तारौ बेगहि पार उतारी।
चरनदास गुरु किरपा सेती, सहजो पाई सरन लिहारी ॥४॥

॥ राग ईमन ॥

ज्यों त्यों राम नाम ही तारै।
जान अजान अग्नि जो छूवै, वह जारै पै जारै ॥ १ ॥
उलटा सुलटा बीज गिरै ज्यौं, धरती माहीं कैसे।
उपजि रहे निहचै करि जानौ, हरि सुमिरन है ऐसे ॥ २ ॥
बेद पुरानन में मथि काढ़ा, राम नाम तत सारा।
तीन कांड[1] में अधिकी जानौ, पाप जलावनहारा ॥ ३ ॥
हिरदा सुद्ध करै बुधि निरमल, ऊँचो पदवी देवै।
चरनदास कहैं सहजो बाई, ब्याधा सब हरि लेवै ॥ ४ ॥

॥ राग रामकली ॥

अब तुम अपनी ओर निहारो।
हमरे औगुन पै नहिं जाओ, तुमहीं अपना बिरद सम्हारो॥१॥
जुग जुग साख तुम्हारी ऐसी, वेद पुरानन गाई।
पतित-उधारन नाम तुम्हारो, यह सुनके मन दृढ़ता आई ॥२॥
मैं अजान तुम सब कछु जानो, घट घट अंतरजामी।
मैं तो चरन तुम्हारे लागो, हो किरपाल दयालहि स्वामी ॥३॥
हाथ जोरि के अरज करत हौं, अपनाओ गहि बाहीं।
द्वार तिहारे आय परी हौं, पौरुष गुन मो में कछु नाहीं ॥४॥
चरनदास सहजिया तेरी, दरसन की निधि पाऊँ।
लगन लगी अरु प्रान अड़े हैं, तुमको छोड़ कहौं कित जाऊँ ॥५॥

॥ राग भैरो ॥

हम बालक तुम माय हमारी। पल पल माहिं करो रखवारी ॥१॥
निस दिन गोदी ही में राखो। इत वित बचन चितावन भाखो॥२॥
बिषै ओर जान नहिं देवो। ढुर ढुर जाउँ तो गहि गहि लेवो ॥३॥
मैं अनजान कछू नहिं जानूँ। बुरी भली को नहिं पहिचानूँ ॥४॥

---

(१) लोक।

जैसी तैसी तुमहीं चीन्हेव । गुर ह्वै ध्यान खेलौना दीन्हेव ॥५॥
तुम्हरी इच्छा ही से जीऊँ । नाम तुम्हारो इमृत पीऊँ ॥६॥
दिष्टि तिहारो ऊपर मेरे । सदा रहूँ मैं सरनैं तेरे ॥७॥
मारो झिड़कौ तो नहिं जाऊँ । सरक सरक तुमहीं पै आऊँ ॥८॥
चरनदास है सहजो दासी । हो रिच्छक पूरन अबिनासी ॥९॥

॥ राग सोरठ ॥

जग में कहा कियौ तुम आय ।
स्वान की ज्यों पेट भरि कै, सोवौ जन्म गँवाय ॥ १ ॥
पहर पिछले नाहिं जागो, कियो ना सुभ कर्म ।
आन मारग जाय लागो, लियो ना गुरु धर्म ॥ २ ॥
जप न कीयो तप न साधो, दियो ना तैं दान ।
बहुत उरझो मोह मद में, आपु काया मान ॥ ३ ॥
देह घर है मौत का रे, आन काढ़ै तोहि ।
एक छिन नहिं रहन पावै, जब कैसे कुछ होय ॥ ४ ॥
रैन दिन आराम ना, काटै जो तेरी आव ।
चरनदास कहैं सुन सहजिया, अब करौ भजन उपाव ॥ ५ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

सठ तजि नाँव जगत सँग राचो ।
जेहि कारन बहु स्वाँग कछे हैं, चौरासी तन धरि धरि नाचो ॥१॥
गर्भ माहि जे बचन किये थे, एकहु बार भयो नहिं साचो ।
स्वारथ ही को उठि उठि धावै, राम भजन परमारथ काचो ॥२॥
संतन की टकसाल चढ़ो ना, गुरु की हाट कबहु नहिं जाँचो ।
पंच बिषै के मद में मातो, अभिमानी ह्वै बहुतक नाचो ॥३॥
जम द्वारे की लाज न मानी, नरक अगिन की सहि सहि आँचो ।
चरनदास कहै सहजो बाई, हरि की सरन बिना नहिं बाचो ॥४॥

॥ राग सारँग ॥
(१)

हमरे औषध नाँव धनी का ।
आध ब्याध तन मन को खोवै, सुद्ध करै वह नीका ॥ १ ॥

अमर भये जिन जिन यह खाई, भव नगरी नहिं आये ।
जो पछ करै सँभल दृढ़ राखै, सतगुरु बेद बताये ॥ २ ॥
सतसंगत को भवन बनावै, पड़दा लाज लगावै ।
जगत बासना पवन चलत है, सो आवन नहिं पावै ॥ ३ ॥
सूभ करम लै टेक टहलुवा, दीपक ज्ञान जलावै ।
नित्य अनित्य बिचार सार गहु, हो आसार बगावै ॥ ४ ॥
जीव रूप के रोग भगैं यों, ब्रह्म रूप ह्वै जावै ।
सहजो बाई सुन हुलसावै, चरनदास बतलावै ॥ ५ ॥

(२)

तेरी लीला अधिक सोहावनी ।
देखि देखि मन हुलसत है, संतन के मन भावनी ॥ १ ॥
तत गुन करि ब्रह्मंड बनायौ, अधर धर्यौ अचरज भयौ ।
जाके मध्य यही संसारा, भाँति भाँति रँग रँग हयौ ॥ २ ॥
सात दीप नौ खंड रचे हैं, सुरग मिरत पाताल हीं ।
इच्छा करत सबै बनि आयौ, होइ गयौ ततकाल हीं ॥ ३ ॥
माया अगम अपार तुम्हारी, बरन सकै कहा बेद है ।
तीन गुनन तक बुध पहुँचत है, परे तुम्हारो भेद है ॥ ४ ॥
छिन में उतपति परलै छिन में, जो चाहो सब कुछ बनैं ।
चरनदास गुरु दृष्ट देइ जब, गुनाबाद सहजो भनै ॥ ५ ॥

(३)

परो मन हरि गुन गावत बान ।
बिन गोपाल और जो भाखै, तौ तोहि गुर की आन ॥ १ ॥
बेद माहिं ब्रह्मा गुन गावैं, संकर सींगी माहिं ।
सेस सहस मुख निस दिन गावै, समौ बिचारत नाहिं ॥ २ ॥
बीन लिये नारद मुनि गावैं, गावैं व्यास उचार ।
गनपति सारद गान करत हैं, गंधर्व सभी पुकार ॥ ३ ॥
गुनाबाद गावत प्रभु परसन, बड़े भक्त को भाव ।

सुकदेव गाव चरन हीं दासा, सहजो कूँ भी चाव ॥ ४ ॥

॥ राग पुरबी ॥

(१)

हरि कौ कोइ न जानत भेद ।
सब के बड़े सोई पचि हारे, नेत नेत कहि बेद ॥ १ ॥
नाल माहिं ब्रह्मा नहिं आयो, थाकि फिरत केहि कौन ।
जोग ध्यान करि संकर हारे, थाह लेत भये लीन ॥ २ ॥
भेद न पायो सेस सारदा, सुरपति और गनेस ।
बामदेव और सनकादिक, निरे भक्त के भेस ॥ ३ ॥
ज्ञानी गुनी मुनी शिषि तेते, जेते जोगेसुर साध ।
चरनदास कह सहजो बाई, पंडित पोथी लाद ॥ ४ ॥

(२)

मन तोहि कब उपजेगी स्यान ।
इंद्रिन के रस सूँ छुटि निर्मल, पारब्रह्म गलतान ॥ १ ॥
जग सूँ पीठ कहो कब दैहो, सनमुख हरि की ओर ।
साधों की संगत कब करिहो, कुल कुटुँब को छोड़ ॥ २ ॥
जप करिबे को कब तुम लगिहो, चरन कमल के ध्यान ।
निस दिन आयु घटै तन छीजे, मनुष जनम की हान ॥ ३ ॥
तुम जो कहो मैं काल्ह करूँगी, काल्ह काल के हाथ ।
जा कारन ऐसी मति उपजे, सो झूठा है साथ ॥ ४ ॥
चदनदास गुरु मोहिं बतायो, सहजो हिरदे राख ।
भजनहिं एक सार वस्तु है, सब मिलि बेद पुरानन भाख ॥ ५ ॥

॥ राग बिलावल ॥

गुबिंद गुन क्यों नहिं गावो ।
ममता नींद कहा मन सूतो, जाग जाग हरि सों चित लावो ॥१॥
गुन गावत बहु पतित ऊधरे, ऊँची पदवी दीन्ही ।
जाति बरन सूँ ऊपर कीन्ही, आध ब्याध बिपता हरि लीन्ही ॥२॥

भौजल पार भये थिर हूए, आवागवन नसायो ।
वैसीही तुम्हरी गति होगी, करिजै औसर नीको पायो ॥३॥
आधी रात औ तरुन अवस्था, उठि करि ध्यान लगावै ।
ता की अस्तुति सेस करत है, सिव ब्रह्मादिक सीस नवावै ॥४॥
चरनहिं दास बनो पद सेवौ, गुरु उपदेस सँभारौ ।
सहजो नवधा भक्ति करीजै, आप तिरौ औरन कूँ तारौ ॥५॥

॥ राग जैजैवंती ॥

(१)

दसौ दिसा देख तो कूँ और कोई नाहीं ।
नख सिख राज रह्यो, वेदन के मद्ध कह्यो ।
सूत रह्यो की माला भयो, ऐसे ही सब माहीं ॥ १ ॥
सिंध हूँ की लहरैं जानौ, ता में सब पानी मानौ ।
ऐसे नहिं दूजा ठानौ, साईं साईं साईं ॥ २ ॥
ईसुर को रूप लयौ, ब्रह्मंड सब होइ रह्यो ।
नान्ह ही सरूप हयौ, तेरी गति पाई ॥ ३ ॥
चरनदास गुरु दई, आतम बिचार लई ।
सहजो बाई नाहिं रही, जैसे जल झाईं ॥ ४ ॥

(२)

मेरे इक सिर गोपाल और नहीं को भाई ॥टेक॥
आइ बैस हिये माहिं, और दूजा ध्यान नाहिं ।
मेरे तो सर्बस उन, औं हिताई वोई ॥ १ ॥
जाति हूँ की कान तजी, लोक हूँ की लाज भजी ।
दोनों कुल माहिं बजी, कहा करै सोई ॥ २ ॥
उघरी है प्रीत मेरी, निहचै हुई वा की चेरी ।
पहिरि हिये प्रेम बेरी, टूटै नहीं जोई ॥ ३ ॥
मैं जो चरनदास भई, गति मति सब खोइ दई ।
सहजो बाई नहीं रही, उठि गई दोई ॥ ४ ॥

॥ राग परज ॥

(१)

तेरी गति किनहुँ न जानी हो।
ब्रह्मा सेस महेसुर थाके, चारो बानी हो ॥ १ ॥
बाद करंते सब मत थाके, बुद्धि थकानी हो।
बिद्या पढ़ि पढ़ि पंडित थाके, अरु ब्रह्मज्ञानी हो ॥ २ ॥
सब के परे जु अनभय हारी, थाह न आनी हो।
छान बीन करि बहुतक थाकी, हुई खिसानी हो ॥ ३ ॥
सुर नर मुनि जन गनपति थाके, बड़े बिनानी हो।
चरनदास थकी सहजो बाई, भई सिरानी हो ॥ ४ ॥

(२)

तेरी गति सब में जानी हो ॥ १ ॥
बिधि निषेध करि देखा तो कूँ, लिया पिछानी हो ॥ २ ॥
तत पद त्वं पद असि पद तूहीं, यह न लुकानी हो ॥ ३ ॥
तो बिन दूजा नेक न क्यों ही, यह मन आनी हो ॥ ४ ॥
चरनदास नहिं सहजो बाई, दुबिधा मानी हो ॥ ५ ॥

॥ राग कड़खा ॥

करीमोहिंदास जो आपनी जानि कै, राखियो दृष्टि तुम सदा नीकी।
और कोइ आसरो धरूँ ना जगत में, मानियो साच मैं कहूँ ठीकी ॥
तुही मात औ पिता बंधू तुही, तुही कुल नात है गोत मेरा।
तुही धन धाम औ जीव इस देह का, तो बिना और दूजा न हेरा ॥
जाप तेरा करूँ ध्यान हिरदे धरूँ, समुझि कै ज्ञान तो कूँ पिछानूँ।
सरन तेरी लई टेक ऐसी गही, तुम बिना आन कूँ नाहिं जानूँ ॥
गही जब बाँह बिख्यात जग में भई, सकल लज्जा तुम्हैं है गोसाईं।
कलू[1] के काल[2] में महा भयमान हूँ, चरनहू कवल की राखि छाईं ॥
कहत सहजो दोऊ हाथ को जोरि कै, सीस नीचा किये दीन धारे।
चरनदास गुरु अरज सुनि लीजिये, तुही है इष्ट आसा हमारे ॥

॥ इति सहज प्रकाश की पोथी संपूर्ण ॥

(१) कलजुग। (२) समय।